ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 27 | मई-II-2025 | अंक - 04 | माउण्ट आबू | Rs.-12

ब्रह्माकुमारीज़ ने ध्यान और योगबल से खड़ा किया दुनिया में अद्भुत वातावरण : शाह

गृहमंत्री अमित शाह ने ब्रह्माकुमारीज़ के अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय शान्तिवन पहुंचने पर डायमंड हॉल में आयोजित ब्रह्माकुमारीज़ के सुरक्षा सेवा प्रभाग की सिल्वर ज़ुबली व 'विश्व एकता एवं विश्वास हेतु ध्यान' इस वर्ष की संस्थान की सेवा योजना वार्षिक थीम का किया राष्ट्रीय उद्घाटन।

शान्तिवन-आबू रोड(राज.)। कार्यक्रम के शुभारम्भ के पहले गृहमंत्री ने दादी रतनमोहिनी जी को भावपूर्ण श्रद्धासुमन अर्पित किए और संस्थान की नवनियुक्त राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी को भी बहुत शुभकामनाएं दी। ब्रह्माकुमारीज़ ने तपस्या और तेज से सारी दुनिया भर में सादगी, संयम और सहयोग का अद्भुत वातावरण खड़ा किया है। कार्यक्रम में गृहमंत्री अमित शाह ने कहा कि सशस्त्र बलों के, सुरक्षा कर्मियों के त्याग-तप और बलिदान के कारण आज हम सुरक्षित हैं। न्यूनतम-46 डिग्री टेंपरेचर से लेकर प्लस 46 डिग्री टेंपरेचर तक राजस्थान के रेगिस्तान के अन्दर हमारी सेवाओं की सुरक्षा अपने जीवन का स्वर्णिम काल देकर वह करते हैं। नींद की कमी, पानी की कमी और हिंसा से जूझने के समय उनका मन तनाव में होता है, ऐसे में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान द्वारा हमारे सुरक्षा कर्मियों को तनाव से बाहर लाकर उनके मन, आत्मा और शरीर को शान्ति का मार्ग प्रशस्त करने का प्रयास करना, अपने आप में एक बहुत बड़ा काम है। मैं देश के गृहमंत्री होने के नाते ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान को इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहता हूँ।

आज़ादी की शताब्दी तक हम विश्व में सर्वोच्च अर्थतंत्र होंगे

अमित शाह ने विश्वास जताया कि हम कुछ ही सालों में विश्व में तीसरे नंबर का अर्थतंत्र बनेंगे। परन्तु विश्व में तीसरे नंबर का अर्थतंत्र बनने के साथ ही हमारी जो परम्पराएं हैं, जिनमें सबको विश्व बंधुत्व की भावना व हर मानव के अंदर रही आत्मा को परमात्मा के साथ जोड़ने की शक्ति हमारे अंदर पड़ी है। इतनी ही तेजी के साथ आगे ले जाना यह भारत का लक्ष्य होना चाहिए। आध्यात्मिक जागृति के साथ ब्रह्माकुमारीज़ संस्था बहुत अच्छे से काम कर रही है जो हमारे उद्देश्य को और अच्छे से पूरा करने की दिशा में हमें आगे बढ़ने में और तीव्र गति मिलेगी।

योग के रास्ते से ही विश्व शांति आएगी

देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस बनाकर हमारी वैदिक परम्परा, ऋषि-मुनियों की सबसे अमूल्य धरोहर को समस्त विश्व को देने का काम किया। आज समूचे विश्व में करोड़ों लोग ध्यान और अध्यात्म के रास्ते पर अपने जीवन का कल्याण कर रहे हैं और खुद को सशक्त बना रहे हैं।

शान्तिवन में प्रवेश मात्र से अगाध शान्ति का हुआ अनुभव

मैं पहली बार ब्रह्माकुमारीज़ के कार्यक्रम में आया हूँ। मैंने बहुत सुना था कि ब्रह्माकुमारीज़ योग और ध्यान के माध्यम से पूरे विश्व में मानव के अन्दर शान्ति और साधना का दीप प्रज्वलित करने का कार्य कर रही है। जब मैंने इस संस्थान के मुख्यालय शान्तिवन में प्रवेश किया तब न मैंने कुछ सुना था, न कुछ किया था परन्तु यहाँ आते ही मन को अगाध शान्ति का अनुभव हुआ। संस्था की अबतक चली सभी गतिविधियों ने ध्यान, साधना, मानसिक शान्ति, आंतरिक स्थिरता और सद्मार्ग पर चलने की प्रवृत्ति को उत्तेजन देने की सभी प्रवृत्ति के लिए मैं पूज्य लेखराज कृपलानी जी को बहुत आदर सहित प्रणाम करके उनको श्रद्धांजलि देना चाहता हूँ। समाज के अन्दर व्यक्तिगत जीवन में जब गुरू मिल जाता है तो कई लोगों का जीवन सन्मार्ग पर प्रशस्त होने के बहुत सारे उदाहरण हैं। मगर कुछ लोग इस प्रकार का काम करके जाते हैं जो हर व्यक्ति की आत्मा को ही एक दीप बनाकर प्रकाशमय मार्ग पर चलने के लिए हर व्यक्ति को प्रशस्त करते हैं। लेखराज कृपलानी जी ने ब्रह्माकुमारीज़ की स्थापना करके हरेक व्यक्ति की आत्मा को ही एक दीपक बनाकर उसके प्रकाश में आगे बढ़ने के लिए एक बहुत बड़ा आह्वान किया है। जिसका आज समाज पर बहुत बड़ा असर दिख रहा है।

- शेष पेज 3 पर...

ब्रह्माकुमारीज़ सुरक्षा बलों को मानसिक मज़बूती और भावनात्मक संतुलन दे रहीः भजनलाल

राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि गृहमंत्री देश की सुरक्षा नीति के कुशल सारथी हैं। साथ-साथ ब्रह्माकुमारीज़ के कार्यक्रम में उनकी उपस्थिति बताती है कि वे आध्यात्मिक उन्नति को भी राष्ट्र की मजबूती का आधार मानते हैं। सीएम ने दादी रतनमोहिनी को श्रद्धांजलि दी। उन्होंने कहा कि दादी जी का जीवन सेवा, साधना और अनुशासन

की मिसाल रहा। अब राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी के मागदर्शन में सेवाएं नये आयाम लेंगी। संस्था की थीम मौजूदा समय में बेहद प्रासंगिक है। ध्यान और योग से जवानों को मानसिक और शारीरिक शक्ति मिलेगी। ब्रह्माकुमारीज़ सुरक्षा बलों को मानसिक मजबूती और भावनात्मक संतुलन दे रही है। राजयोग तनावमुक्त जीवन और आत्मबोध का माध्यम है।

खुशी के बारे में सोचें या परिस्थिति को प्रबन्धित करने के बारे में!

राजयोगी ब्र.कु. गंगाधर भाई

कई लोग कहते हैं कि हम खुशी के बारे में सोचें या परिस्थिति से निपटने के बारे में सोचें! क्योंकि परिस्थितियाँ जल्दी-जल्दी बदलती रहती हैं। ऐसे में हम शारीरिक स्वास्थ्य पर ध्यान दें या मानसिक स्वास्थ्य पर, इसको समझना बहुत ज़रूरी है।

एक सेकण्ड के लिए हम खुशी के बारे में सोचना साइड में रखते हैं। पहले, ये सोचें कि परिस्थितियों को प्रबंधित करने के लिए अपनी फिज़िकल स्ट्रेन्थ यानी कि शारीरिक शक्ति भी तो चाहिए! आज अगर मैं बीमार हूँ तो गाड़ी लेकर ऑफिस में कैसे जाऊं? तो जब ये प्रश्न उठता है तो पहले अपना फिज़िकल स्टैमिना को देखूं या परिस्थितियों को हैन्डल करूँ। मुझे शारीरिक स्टैमिना के बारे में न सोचकर, पहले मुझे सिर्फ परिस्थितियों के ऊपर ही फोकस करना चाहिए। ऐसा ही होगा ना! फिर अगर शरीर स्वस्थ नहीं है तो वर्क पर कौन जाएगा? वर्क पर जाने का तो छोड़िए, पहले ऑफिस जा कैसे सकेंगे! इसलिए सारे दिन के अन्दर में ये ज़रूर ध्यान रखना है कि मेरा शारीरिक स्वास्थ्य ठीक चल रहा है या नहीं। फिर भी भोजन तो खा लेना चाहिए। चलो आप एक या दो दिन भोजन छोड़ देंगे लेकिन प्रश्न ये है कि कितने दिन तक छोड़ेंगे? आज तो मनुष्य भागते-भागते भी खा रहे हैं, इधर-उधर से जंक फूड भी खा रहे हैं। अगर आपने भोजन स्कीप भी कर दिया लेकिन कितने दिन तक! कितने दिन तक उसे दरकिनार करेंगे? दो दिन, चार दिन। फिर उसके बाद तो आप खाएंगे ना! क्योंकि जीवन दो-चार दिन का तो है नहीं। ये तो जीवन यात्रा है और आप इस जीवन यात्रा में सेवा पर हैं। अगर ऐसे में आपका अपना शारीरिक स्वास्थ्य ही ठीक नहीं है तो आपको उसकी कीमत चुकानी ही पड़ेगी ना! इसलिए हम उसको भी दरकिनार नहीं कर सकते। सेहत का ध्यान रखना ये भी परम आवश्यक है लेकिन सेहत के ध्यान के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य का भी ध्यान रखना उतना ही ज़रूरी है। ऐसे नहीं कि उसे दरकिनार कर दिया कि इसके बारे में बाद में सोचेंगे, नहीं। मानसिक स्वास्थ्य को भी हमें उतनी ही प्राथमिकता देनी पड़ेगी जितनी कि अपने शारीरिक स्वास्थ्य को। तो हम जीवन की यात्रा पर ठीक से चल पाएंगे। एक है शारीरिक स्वास्थ्य और दूसरा है मानसिक स्वास्थ्य।

इसी बीच अगर आपको पांच मिनट पहले ही पता चला कि मुझे स्कूल में बच्चों को छोड़ने जाना है, ठीक है! अगर मैं उस वक्त शान्त रहूँ, स्टेबल रहूँ। छोड़ने तो फिर भी जाना ही है, गाड़ी तो आपको ही चलानी है। लेकिन किस स्थिति में चलाएंगे? अगर मानसिक स्वास्थ्य ठीक नहीं है तो आप किस फीलिंग्स से चलाएंगे, मनो-दु:ख की फीलिंग्स में ना! हम भावनात्मक स्वास्थ्य को भी उतना ही महत्व दें जितना कि शारीरिक स्वास्थ्य को। क्योंकि शारीरिक स्वास्थ्य और भावनात्मक स्वास्थ्य अलग नहीं हैं, ये दोनों कम्बाइण्ड हैं। जैसे कि एक ही सिक्के के दो पहलू। अगर मैं भावनात्मक स्वास्थ्य से ठीक हूँ तो मैं इन परिस्थितियों को क्रॉस कर सकता हूँ यानी कि हैण्डल कर सकता हूँ। ऐसे नहीं सोचें कि पहले मैं परिस्थितियों को हैण्डल कर लूँ फिर अपने मानसिक स्वास्थ्य के बारे में सोचेंगे। मानसिक स्वास्थ्य और शारीरिक स्वास्थ्य दोनों ही कम्बाइण्ड हैं। जब दोनों बैलेन्स में रहेंगे तब ही हमारी जीवन यात्रा सुखद यानी सुकून से चल सकती है।

यहाँ पर एक बात और आती है जो आज दिन तक इस बात को हम मुश्किल समझ रहे थे, जैसे कि गार्डन में जाकर जॉगिंग करने की शुरुआत ही की थी क्योंकि फिज़िकल हेल्थ को सुदृढ़ करना है। इस बात को भी हम स्ट्रेस की तरह ले रहे थे मतलब कि लोगों को ये महसूस हो रहा कि क्या मैं खा रहा हूँ, कितना खा रहा हूँ, किस वक्त पर खा रहा हूँ, कितनी एक्सरसाइज़ कर रहा हूँ, क्यों हम फिज़िकल हेल्थ के बारे में सोच रहे हैं! देखिए ज़्यादा पीछे मत जाइए। अगर हम एक जेनरेशन पीछे जाते हैं, तो अपने मात-पिता को ही देखिए वे कभी भी जॉगिंग के लिए नहीं गए, न किसी ने मिनरल वॉटर तक पीया उन दिनों में, किसी को इतना डाइट कॉन्शियस भी नहीं रहना पड़ता था, नॉर्मल लाइफस्टाइल, नॉर्मल भोजन करते थे। लेकिन आज इतना ज़्यादा क्यों ध्यान रखना पड़ रहा है शारीरिक स्वास्थ्य पर! ऐसा इसलिए क्योंकि आज के समय भावनात्मक स्ट्रेस बहुत ज़्यादा है। मूल में हम(आत्मा) हैं ये ध्यान रखेंगे तो सभी प्रकार की प्रॉब्लम समाप्त हो जाएंगी। क्योंकि उसका ध्यान रखेंगे तो बाकी बातों को ध्यान में रखने की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी।

आज आप जॉगिंग करने तो जा रहे हैं लेकिन जल्दी-जल्दी में। उसमें भी तो आज तो दो-तीन लोग इक्कट्ठे जॉगिंग कर रहे हैं और उनके बीच जो बातें चल रही हैं उसकी क्वालिटी कैसी है, तो उसका प्रभाव मन पर ही नहीं लेकिन शरीर पर भी तो पड़ता होगा ना! तो फिज़िकल हेल्थ ज़रूरी है लेकिन हम इतना ध्यान नहीं देते कि फिज़िकल हेल्थ पर मानसिक हेल्थ का गहरा प्रभाव पड़ता है। इस बात पर ध्यान देंगे तो पूरी तरह से स्वस्थ हो जाएंगे। बस एक ही साइड पर ध्यान देंगे और दूसरी साइड को पूरी तरह से दर किनार कर देंगे तो उस पर भी प्रभाव होगा ही। मेहनत ज़्यादा और रिज़ल्ट कम ही होगा।

आध्यात्मिक विमान का स्विच कौन-सा?

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

हमारे को शिवबाबा ने एक बहुत अच्छी सौगात दी है, हम भी आपको देने चाहते हैं। एक मैं आपको विमान देने चाहती हूँ। विमान तो अच्छी चीज़ है ना! तो आप सभी को एक विमान मैं सौगात में देती हूँ। जो हमको शिवबाबा ने दिया है। विमान कौन-सा है? मन ही विमान है। मन से आप एक सेकण्ड में जहाँ से भी आये हो, आप पहुँच सकते हो बिना टिकेट के? टिकेट खर्ची नहीं पड़ेगी क्या? नहीं ना! तो मन विमान है ना। अमेरिका में भी पहुंच सकते हो। तो मन एक विमान है। सभी के पास है लेकिन इसको यूज़ कैसे करें? विमान में स्विच तो होगा ना कोई! तभी तो चलेगा ना!

तो इस आध्यात्मिक विमान का स्विच कौन-सा है? परमात्मा। बस परमात्मा को याद किया- शिवबाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा, बस ये स्विच है। स्विच मिला? याद रखना स्विच, भूल गये तो उड़ेंगे नहीं। अच्छा स्विच ये है। अब पंख होते हैं विमान में तो पंख कौन-से हैं? एक हिम्मत और दूसरा उमंग-उत्साह। जिसके जीवन में उमंग-उत्साह नहीं है ना तो वो जीवन जैसे कौमा में है। उमंग-उत्साह समझ रहे हैं ना! मन में खुशी का उमंग आता है ना! उत्साह भी आता है।

जब कोई उत्सव होता है तो उत्साह भी आता है। जैसे दीपावली का उत्सव आया तो कितना उत्साह होता है। उमंग और उत्साह जीवन में ज़रूर चाहिए। तो एक पंख है हिम्मत। क्योंकि हिम्मत के लिए भगवान का वायदा है हमारे से कि एक कदम अगर हिम्मत का आपने उठाया तो हज़ार कदम मदद के लिए मैं बंधा हुआ हूँ। ये हमने अनुभव किया है। ऐसे ही नहीं, मैं स्लोगन नहीं कह रही हूँ। लेकिन प्रैक्टिकल में हमने इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में बाल जीवन से बड़े हुए हैं और कई अनुभव किए हैं। सिर्फ हिम्मत नहीं हारो। एक कदम हिम्मत का पक्का रखो और हज़ार कदम परमात्मा की मदद नहीं मिले ये असम्भव है। क्योंकि हमने प्रैक्टिकल अनुभव किया है और अब लाखों परिवार अनुभव कर रहे हैं, एक का अनुभव नहीं है। तो हिम्मत और उमंग-उत्साह इसके पंख हैं।

अच्छा पेट्रोल क्या है? पेट्रोल के बिना तो चलेगा नहीं। तो ज्ञान और योग, ये है इसका पेट्रोल। तो आपको ज्ञान-योग का पेट्रोल मिल रहा है? हिम्मत का पंख मिल रहा है? उमंग-उत्साह, दिल में खुशी ये मिल रही है? अभी आपके सामने कोई भी समस्या आवे, समझो हिमालय जितनी समस्या है, बड़े में बड़ा हिमालय है।

चलो इतनी बड़ी समस्या है लेकिन आप विमान से चले जाओ ऊपर समस्या कहाँ रहेगी? नीचे रहेगी ना! आपको मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। समस्या को मिटाने की मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। लेकिन मन के विमान को परमात्मा की ओर ले जाना पड़ेगा। और वो संकल्प से ही जायेंगे और कोई साधन चाहिए नहीं। वो तो आपका विमान मन के संकल्प का है ही। विमान को स्टार्ट करो और चले जाओ। जा सकते हो ना!

श्रीमत में मनमत मिक्स कर अपने को ठगना नहीं

राजयोगिनी दादी जानकी जी

संगमयुग जो इतना प्यारा लगता है, वह पूरा हो जायेगा तो हम क्या करेंगे? भले पता है कि बाबा के साथ जायेंगे, और सब आत्मायें मच्छरों सदृश्य जायेंगी। आत्मा उड़ती है ना, अगर अन्त में आत्मा मच्छरों सदृश्य जाये तो उस आत्मा की क्या वैल्यू है? मच्छर की क्या वैल्यू है। ऐसी आत्माओं का इस दुनिया में रहने से कोई फायदा नहीं है। लेकिन मैं आत्मा ऐसी न रहूँ, जो ऐसे ही चली जाऊं। मैं आत्मा बीमारियों को खत्म करने वाली हूँ, न कि बीमारी फैलाने वाली। भाग्य विधाता बाबा से जो हम आत्माओं को इतना भाग्य मिला है, हमारे भाग्य का सितारा तो चमक गया, अब उस चमकते हुए सितारे को देख हर एक अपने को जानें, बाबा को पहचानें और घर चलने के लिए तैयार हो जायें। हमारी ऐसी चमक हो। बाबा ने कहा है- आप मरे मर गयी दुनिया, यह शरीर छी-छी है, शरीर से काम लेना है, इससे तंग नहीं होना है लेकिन मोह भी नहीं रखना है। जो अपने आपको नहीं समझते हैं वो प्यार से अपने आपको नहीं सम्भाल सकते फिर दूसरे से खफा हो जाते हैं, तकदीर बनाने वाले कभी खफा नहीं होते हैं, थकते नहीं हैं। तकदीर ऊंची बनाने की बाबा ने हमें समझ दी है, साथ दिया है। टीचर स्कूल में कोई साथ नहीं देता है, वो अपनी ड्यूटी पालन करता है, बाबा हमको साथ देता है, मात-पिता के रूप में भी, सखा के रूप में भी कि हम होशियार हो जायें, अच्छा पढ़कर स्कॉलरशिप लेने के।

मम्मा ने स्कॉलरशिप ले ली ना। मम्मा किसी के चिन्तन में नहीं गयी। पर अपने जीवन के उदाहरण से, उठते-बैठते सिखाती रही। तो बड़ों को देख-देखकर जो सीख जाता है, उसे वरदान मिल जाता है। कई मिसाल हैं जो इतने भोले-भाले, मम्मा-बाबा को देख ऐसा सीखे हैं, जो उनको पूछो तो कहते हैं बड़ों का वरदान है। जो बड़े बोलें, उसे दिल से स्वीकार करें तो कई कार्य सहज हो जाते हैं। मुझे सिर्फ हाँ जी कहके दिल से करना है। इससे जो दुआएं मिलती हैं वो दुआएं काम करती हैं, जो खुद नहीं करते हैं, दुआएं कराती हैं।

आप सब भी कहो हमको बड़ों की दुआएं हैं। हमको आगे बढ़ाने वाले, ऊंच उठाने वाले कौन हैं? सच्ची दिल से करने वाले को दुआएं मिलती हैं। ऊंची तकदीर बनाने वाले अपने को या बाप को ठगेंगे नहीं। दिखावा नहीं करेंगे। कईयों के अन्दर होगी मनमत और मुख से कहेंगे श्रीमत। अपनी कामना पूरी करने के लिए जो श्रीमत में अपनी मत मिक्स करता है वो अपने आपको ठगता है। मीठा बाबा कहते हैं, ज्ञानी तू आत्मा मुझे प्रिय है। संगम पर एक-एक मिनट जो बाबा कराता है, वही करना है।

सब बातों से प्रूफ होंगे तो बाबा को प्रूफ दे सकेंगे

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

बाबा ने हमें पैगम्बर बनाया है, परन्तु पैगम्बर कभी-कभी कहते कि मेरा माइन्ड डिस्टर्ब है। हूँ मैं निर्माण करने वाला लेकिन खुद का निर्माण करना मुझे नहीं आता। तो हम समझें कि हम दूसरों के लिए पंडित हैं। स्व से सृष्टि का निर्माण होगा या सृष्टि से स्व का? तो हरेक चेक करो कि मैं स्व का निर्माण कर रहा हूँ? क्या निर्माण करने वाला कभी बिगड़ेगा? अगर मैं बिगड़ गई तो क्या मैं बिगड़ी को बनाने वाली हुई या बनी हुई को बिगाड़ने वाली? इस टाइम मैं पैगम्बर कौन-सा संदेश सबको देती? बिगड़ने का या निर्माण करने का? कईयों का मूड एकरस से निकल कर ऑफ हो जाता। यह कितनी अच्छी बात है। उस समय हमारी सूरत से कौन-सा पैगाम मिलता है? नव निर्माण का? कई कहते मेरे में देह-अभिमान बहुत है। पर बाबा तो जानता है ना कि हैं ही सब देह-अभिमानी। मैं इन गिरी हुई आत्माओं को ही देही-अभिमानी बनाने आया हूँ। फिर बाबा को क्यों कहते- मेरे में देह-अभिमान है! अगर सर्जन को कोई पेशेन्ट कहे हे सर्जन मेरी तो वही बीमारी है, तो यह भी उसकी इनडायरेक्ट इन्सल्ट हुई ना। अगर कहते मेरे में वही का वही देह-अभिमान है तो बाबा का मैंने कितना रिस्पेक्ट किया! यही पढ़ाई की रिज़ल्ट सुनाई? बाबा ने पढ़ाया देही-अभिमानी बनो, हम जवाब देते हमारे में देह-अभिमान है। तो क्या यही प्यार का जवाब है? अगर अभी तक मेरे में वही देह-अभिमान है तो शूद्र कुमार और ब्रह्माकुमार में अन्तर ही क्या रहा? फिर कहेंगे आप जो भी समझों। तो मैं समझूँ तुम राजयोगी नहीं हो ना!

कहते हैं बाबा मुझे और कुछ नहीं चाहिए सिर्फ मुझे सभी प्यार से चलायें। मैं पूछती बाबा प्यार का सागर है, क्या वो प्यार नहीं दे रहा है, उनसे ज़्यादा और कोई प्यार देने वाला है? चलाने वाला बाबा या हम-तुम? प्यार का सागर हमें प्यार से पाल रहा है। हमें नया जन्म दिया, वर्सा दे रहा है, हम उसकी पालना के अन्दर हैं, वह हमें अति प्यार से इस पुरानी दुनिया से नई दुनिया में ले चलता। कितनी बार कहता ओ मेरे मीठे-मीठे बच्चे, यह कितने प्यार के बोल हैं। बाबा ने यह बोल सबके लिए बोला है या एक-दो के लिए? तुम किसको बोलते कि हमें प्यार से चलाओ? किसको अक्ल सिखाते हो?

बाबा ने हमें मंत्र दे दिया- जो देखते हो वह न देखो, जो न दिखाई देता है उसे याद करो। भिन्न-भिन्न संस्कार तो कर्मों का हिसाब-किताब है। मुझे कर्म का खाता चुक्तू करना है, ना कि बनाना है। मैं सब हिसाब-किताब चुक्तू करने, कर्मातीत बनने के लिए बैठी हूँ फिर मैं अपना हिसाब-किताब संस्कारों के वश क्यों बनाऊं!

अगर हम हर घड़ी यही समझें कि हम स्टेज पर हैं, अगर कोई स्टेज पर बैठ मूड ऑफ करे, रोता रहे तो वह सबको अच्छा लगेगा? उस समय मुझे सबसे प्यार मिलेगा? स्टेज पर बैठ कर रोओ तो सब देखें कि मैं ब्र.कु. कितना दु:खी हूँ, मैं कितना उदास हूँ, जब गुस्सा आता है तो स्टेज पर जाकर गुस्सा करो, सब देखें मेरा चेहरा कैसा है। मैं सुन्दर हूँ या काला हूँ! हूँ तो मैं पैगम्बर लेकिन क्रोध वाला हूँ। रोने वाला हूँ। शायद यह गुस्सा भी मेरी सर्विस करे? फिर देखने वाले कहते- इनका यही प्रैक्टिकल का ज्ञान है! कहते हैं मेरी वृत्ति दृष्टि खराब होती है, मैं कहती तू खराब हो। बाबा हमें काले से गोरा बनाता फिर कहते दृष्टि खराब होती। खराब रावण है या राम? राम का होकर रहो। अगर सीता कहे मेरी तो वृत्ति खराब हो जाती तो राम पसन्द करेगा? राम के बच्चे होकर मेरी खराब वृत्ति जाती। लज्जा नहीं आती? जब न्यू बर्थ हो गया तो पुराना हिसाब-किताब समाप्त हुआ। ज्ञान कहता है सब बातों से प्रूफ होंगे तो बाबा को प्रूफ दे सकेंगे। बाबा के सपूत बच्चे कहलायेंगे।

राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की मुख्य प्रशासिका नियुक्त

- अंतर्राष्ट्रीय ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की नई मुख्य प्रशासिका के रूप में 84 वर्षीय राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी को दायित्व सौंपा गया है। वे ब्रह्माकुमारीज़ की छठी मुख्य प्रशासिका के रूप में दायित्व संभाल रही हैं। ब्रह्माकुमारीज़ के इतिहास में अब तक मुख्य प्रशासिका का दायित्व दादियों के हाथों में रहा है। अब यह पहला अवसर है कि जब ब्रह्माकुमारीज़ दीदी यह दायित्व संभाल रही हैं। मोहिनी दीदी अमेरिका में भी कई वर्षों से संस्थान की सेवाओं को आगे बढ़ा रही हैं।
- मोहिनी दीदी ने पहली बार वर्ष 1972 में विदेश में ब्रह्माकुमारीज़ के सेवाकेन्द्र खोले।
- वर्ष1976 में उत्तरी अमेरिका में पहली बार ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्रों की स्थापना उन्हीं के द्वारा की गई थी।
- पहले कैरेबियन और फिर वर्ष 1978 में अमेरिका के लिए एक क्षेत्रीय मुख्यालय की स्थापना उन्होंने ही की थी।
- वे संस्थान के यूएसए के वर्ल्ड स्पिरिचुअल ऑर्गनाइजेशन की अध्यक्षा भी हैं।
- वर्ष 1981 से वे संयुक्त राष्ट्र में एक गैर सरकारी संगठन के रूप में ब्रह्माकुमारीज़ का प्रतिनिधित्व करती रही हैं।
- गत 8अप्रैल को मुख्य प्रशासिका 101 वर्षीय राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी के निधन के बाद उनकी नियुक्ति की गई और साथ ही राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी को अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका नियुक्त किया गया है।
- वर्ष 1941 में दिल्ली में जन्मी ब्र.कु. मोहिनी दीदी ने दिल्ली विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त की है। उन्होंने इतिहास, राजनीति विज्ञान और पत्रकारिता में स्नातक की डिग्री ली है।
- मोहिनी दीदी ने अपने आध्यात्मिक करियर में उस समय महत्वपूर्ण योगदान दिया, जब उन्होंने वर्ष 1972 में विदेश में पहली बार सेवाकेन्द्र स्थापित किया।
- वह वर्ष 1981 से संयुक्त राष्ट्र में संस्थान का प्रतिनिधित्व कर रही हैं।
- राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी ने कहा कि उन्हें ब्रह्मा बाबा के साथ रहने और शिक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य मिला है। उन शिक्षाओं को वे अपने जीवन और सामाजिक जीवन में उपयोग करती हैं। जैसा घरों में होता है पहले दादा-दादियों को आगे रखा जाता है, उसी तरह अब दादियों के बाद उन्हें यह दायित्व सौंपा गया है। यह बदलाव संस्थान के लिए एक नए युग की शुरुआत का प्रतीक है, जहाँ पहली बार दादियों के बजाय दीदियों को शीर्ष ज़िम्मेदारियां दी गई हैं। वहीं शीर्ष दीदियों में राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. सुदेश दीदी प्रमुख हैं जो ब्रह्माकुमारीज़ की चीफ बनी हैं।
- मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी ने कहा कि आज की दुनिया में शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक स्वास्थ्य बहुत ज़रूरी है। दौड़ती-भागती ज़िंदगी, स्पर्धा के चलते लोग अपना ध्यान नहीं रखते हैं और शरीर बीमारियों का शिकार हो जाता है। साथ ही मानसिक दबाव के चलते तनावग्रस्त हो जाते हैं। आध्यात्मिकता को अपनाने से ही समाज स्वस्थ और सुखी हो सकता है। उन्होंने भाई-बहनों से आह्वान किया कि राजयोगी जीवन में अनुशासन बहुत ज़रूरी है तभी हमारी उन्नति होगी। हमारे जीवन में हर चीज़ जब अनुशासन में चलती है तो हम दूसरों के लिए आदर्श बन जाते हैं। आदर्श जीवन से ही हर कोई प्रभावित होता है, इसलिए अपना जीवन आदर्श बनाएं।

इंदौर-ज्ञान शिखर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के युवा प्रभाग द्वारा 'कॉल ऑफ टाइम-इंटरनेट टू इनर नेट' विषय पर सम्बोधित करते हुए रेनेसा यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉ. स्वप्निल कोठारी। मंचासीन हैं राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी, युवा प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. चन्द्रिका दीदी, कस्टम विभाग,इंदौर के अपर आयुक्त दिनेश बिसेन, युवा प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्र.कु. आत्मप्रकाश।

बैतूल-म.प्र.। लाल बहादुर शास्त्री स्टेडियम में आयोजित 'डिज़ाइन योर डेस्टिनी' कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए इंटरनेशनल मोटिवेशनल स्पीकर ब्र.कु. शिवानी। कार्यक्रम में विधायक हेमंत खंडेलवाल, विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे, विधायक गंगा उइके, पूर्व कैबिनेट मंत्री सुखदेव पांसे, पूर्व विधायक समाज सेवी नीलय डागा, जिला सत्र न्यायाधीश दिनेश चंद्र थपलियाल, संयुक्त कलेक्टर मकसूद अहमद, भाजपा जिला अध्यक्ष सुधाकर पवार सहित नगर के कई गणमान्य नागरिक, अधिकारी एवं जिले से आये करीबन दस हज़ार से अधिक लोगों की उपस्थिति रही।

भारत के गृहमंत्री माननीय अमित शाह को शान्तिवन में आयोजित कार्यक्रम में पहुंचने पर अभिवादन करते हुए संस्था की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी एवं अन्य।

ध्यान से आत्मबल बढ़ेगा .... पेज 1 का शेष

'स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन' का विचार सारे देशों तक पहुंचाया

उन्होंने आगे कहा कि लेखराज कृपलानी जी ने आत्मा-परमात्मा और सृष्टि चक्र का जो ज्ञान उन्होंने प्राप्त किया उसी के प्रचार के लिए ब्रह्माकुमारीज़ की स्थापना की गई। आज मुझे इस बात का विशेष गर्व है कि वर्षों से हम सभी भारत के लोग मां के अंदर देवी का वास देखते हैं। वह हम सबके गौरव और अभिमान का विषय है। स्व-परिवर्तन से विश्व परिवर्तन थीम पर कई प्रकार के श्रेष्ठ विचार ब्रह्माकुमारीज़ ने भारत सहित विश्व के अलग-अलग देशों में पहुंचाए।

भारत के गृहमंत्री माननीय अमित शाह को सुरक्षा प्रभाग चिन्ह का मोमेन्टो भेंट करते हुए सुरक्षा प्रभाग की उपाध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. शुक्ला दीदी।

आत्म अनुभूति से परमात्म मिलन तक का सरल तरीका संसार तक पहुंचाया

ब्रह्मचर्य का पालन, शाकाहार, नशामुक्ति, सादगीपूर्ण जीवन, राजयोग ध्यान और इसके माध्यम से आत्मा और परमात्मा से मिलन, आत्मज्ञान की प्राप्ति से शुद्ध, शान्त और अमर आत्मा की अनुभूति करना इन सारी चीज़ों को ब्रह्माकुमारीज़ ने बहुत सरल तरीके से दुनिया के 140 देशों तक पहुंचाने का कार्य किया है। जिसके कारण सभी अपने जीवन को देवतुल्य बना रहे हैं।

भारत के गृहमंत्री माननीय अमित शाह को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए संस्था के अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्र.कु. करूणा एवं ब्र.कु. शिविका।

अधिकारी और जवान चार दिन तक राजयोग ध्यान की बारीकियां सीखेंगे

जल सेना, थल सेना और वायु सेना के 400 से अधिक अधिकारी, जवान भी इस मौके पर विशेष रूप से मौजूद रहे। ये सभी अधिकारी और जवान चार दिन तक आध्यात्मिकता और राजयोग ध्यान की बारीकियां सीखेंगे।

अतिरिक्त महासचिव ब्र.कु. मृत्युंजय ने कहा कि स्वर्णिम भारत बनाने के कार्य में ब्रह्माकुमारीज़ परिवार भारत सरकार के साथ हमेशा कदम से कदम मिलाकर चलने के लिए तैयार है। ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी ने कहा कि सबसे पहले हमें स्वयं के अंदर शान्ति लानी होगी। राजयोग मेडिटेशन से हमें मानसिक शान्ति प्राप्त होती है। मेडिटेशन से मन, बुद्धि, संस्कार की एकाग्रता आती है। सुरक्षा सेवा प्रभाग की उपाध्यक्षा दिल्ली की राजयोगिनी ब्र.कु. शुक्ला दीदी ने कहा कि सुरक्षा सेवा प्रभाग का उद्देश्य हमारे जवानों को आन्तरिक रूप से सशक्त बनाकर राष्ट्र सेवा के लिए मजबूत बनाना है। गृहमंत्री अमित शाह का अतिरिक्त महासचिव डॉ. मृत्युंजय ने इलायची की माला और राजस्थानी पगड़ी पहनाकर स्वागत किया। सोमनाथ मंदिर की प्रतिकृति का मॉडल भी उनको भेंट किया। मधुर वाणी ग्रुप के कलाकारों ने स्वागत गीत की प्रस्तुति दी। सुरक्षा विभाग की 40 साल की सेवाओं का वीडियो द्वारा प्रेज़ेंटेशन भी दिखाया गया।

त्रिवेन्द्रम-केरल। राजभवन में अलैहिस्सलाम के गेमप्ले में मिशन स्पंदन के तहत नशा मुक्त भारत मोबाइल वैन सेवा के उद्घाटन पश्चात् केरल के राज्यपाल महामहिम राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. बीना दीदी। साथ हैं ब्रह्माकुमारीज़ मेडिकल विंग के सचिव राजयोगी ब्र.कु. डॉ. बनारसी लाल शाह, ब्र.कु. डॉ. सचिन परब तथा अन्य।

घाटकोपर-मुंबई(महा.)। घाटकोपर ब्रह्माकुमारीज़ के योग भवन में जैनाचार्य श्री युगभूषणसूरि महाराज(पंडित महाराज जी) को सेवाकेन्द्र आगमन पर स्नेह मिलन पश्चात् समूह चित्र में राजयोगिनी ब्र.कु. शकु दीदी,घाटकोपर सबज़ोन अतिरिक्त प्रभारी, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. विष्णुप्रिया, ब्र.कु. निकुंज,ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया विंग के राष्ट्रीय समन्वयक तथा अन्य।

निवाली-म.प्र.। ज्ञान चर्चा करने के पश्चात् विधायक श्याम बड़ोले को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. साधना।

ग्वालियर-माधौगंज(म.प्र.)। गुड़ी पड़वा व चैत्र नवरात्रि के पावन अवसर पर आयोजित स्नेह मिलन कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए प्रेरक वक्ता ब्र.कु. प्रह्लाद। मौके पर उपस्थित रहे स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. आदर्श बहन, साइंस कॉलेज जन-भागीदारी समिति अध्यक्ष एवं आर्किटेक्ट अजय बंसल, टी.एन.सी.पी. संयुक्त संचालक कृष्ण कांत कुशवाहा, समाजसेविका आशा सिंह, कॉन्फिडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स ग्वालियर की संस्थापक सदस्य एवं महिला उद्यमी श्रीमती रीना गांधी, ब्र.कु. डॉ. गुरचरण सिंह।

रायपुर-तिल्दा(छ.ग.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित 'सशक्त नारी शक्ति समाज का आधार' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए डॉ. अलका सुना,ऑनर सुना हॉस्पिटल, पूर्व सरपंच ग्राम तुलसी अनुराधा वर्मा, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रियंका, ब्र.कु. कांति तथा अन्य।

साइलेंस... एक पॉवरफुल मेडिसिन

राजयोगिनी ब्र.कु. उषा बहन, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

विदेही बनना माना स्वमान का स्वरूप होना

- गतांक से आगे...

पिछले अंक में आपने पढ़ा कि जो एकदम ऐसे न्यारे हो जायें धीरे-धीरे सारी रेस्पॉन्सिबिलिटी को भी हमने निभाकर उसको भी पूरा कर सम्पन्न कर दिया। किसी को नाराज़ भी नहीं किया। सम्पूर्ण खिला हुआ रहे। अपनी खुशबू भी फैलाई। लेकिन सम्पूर्ण खिल करके सारी पत्तियों को झड़ करके बीच का जो बुर रह गया माना अशरीरी हो गया। तो ये स्वीट साइलेंस है।

उसके बाद है डीप साइलेंस। और डीप साइलेंस किसको कहेंगे? डीप साइलेंस का मतलब है गहराई में खो जाना, समा जाना। बाहर की दुनिया से एकदम अपने आप मन और बुद्धि को ले जाना है विदेही स्थिति में। अब यहाँ पर एक बात ये भी समझनी है कि विदेही और अशरीरी में क्या अंतर है? है कोई अंतर? या खाली शब्दों का ही अंतर है? क्या कहेंगे? विदेही और अशरीरी दोनों एक ही हैं या अलग हैं? देखो राजा जनक जो था ना विदेही था, अशरीरी नहीं था। इसीलिए बाबा कई बार कहते हैं विदेही बनना है। राजा जनक की तरह एक सेकंड में विदेही स्थिति में स्थित हो जाना। कहा जाता है कि रामायण में एक बात आती है, जब सीता जी जंगल में जा रही थी वनवास मिला तो उस वक्त उसके मायके से मैसेज आया सीता जी के लिए और मैसेज में उसके पिता ने यही कहा कि तुम वन में जा रही हो चौदह साल के लिए तो विदेही बनकर रहना। इसलिए विदेही बनकर रही वो, इसलिए रावण उसको स्पर्श नहीं कर सका। कहने का भावार्थ विदेही स्थिति में कोई भी बुराई हमें स्पर्श नहीं कर सकती। और हम मुक्ति-जीवनमुक्ति की स्थिति में सहज आ सकते हैं इसलिए विदेही स्थिति के लिए प्रतिदिन आपको एक सुबह-सुबह स्वमान दिया जाता है किसलिए? विदेही बनने के लिए। तो विदेही बनना माना स्वमान का स्वरूप होना। स्वमान के स्वरूप होकर उसकी गहराई में जाना। जो कहा ना डीप साइलेंस। ऐसा स्वरूप बनकर उसकी गहराई में समा जायें और उसका वास्तविक अनुभव करते जायें उसको कहा विदेही। ये स्वमान कोई जपने के लिए थोड़ी दिया है कि रोज़ स्वमान अगर मैं ले लूं तो उसका सारा दिन जाप करती रहूँ, जाप नहीं करना है लेकिन उसका स्वरूप बनना है।

जैसे शुरू-शुरू में दादियां सुनाती थीं कि बाबा ने हम बच्चों को चौदह साल की तपस्या कराई तो उसमें भी बाबा ने स्वमान दिया था। और स्वमान क्या दिया था 'मैं चतुर्भुज हूँ' अर्थात् दो हाथ नर के और दो हाथ नारी के। कोई भी कार्य के लिए ये नहीं कहना कि ये तो मैं नहीं कर सकती हूँ क्योंकि मैं नारी हूँ। चतुर्भुज माना दोनों ही। हमने भी अल्टरनेट क्या किया है, मेल का बॉडी भी लिया है और फीमेल का बॉडी भी लिया है। तो दोनों संस्कार हैं ना हमारे अन्दर? तो बाबा ने ये स्वमान देकर दोनों संस्कारों को इस तरह से जागृत किया कि निर्भय बना दिया सब बच्चों को। ऐसा निर्भय थे कि वो डरते नहीं थे। रात का पहरा देती थी बहनें। ट्रक चलाती थी। निर्मल शांता दादी ने बताया कि मैकेनिक का काम करते थे। बड़े-बड़े टॉप में छोटे-छोटे बच्चे अन्दर घुस कर साफ करते थे। क्यों? क्योंकि ये नहीं कहे कोई बच्चा कि मैं ये काम नहीं कर सकता हूँ।

इस तरह से जीवन में रहते हुए जिसको कहा जाये ना आत्मनिर्भर। किसी के ऊपर भी आधारित न हो। ये हो तो ही काम हो, ये न हो तो काम न हो। नहीं। हम चतुर्भुज हैं। और जितनी बार वो स्वमान को हम अन्दर में याद भी करते हैं उतनी बार हम उस संस्कार को जागृत करते हैं। और इस तरह से बाबा ने जब कहा कि स्वमान की माला दी है तो इस तरह से रोज़ स्वमान लेकर उसके स्वरूप बनो। -क्रमशः

शान्तिवन-आबू रोड(राज.)। ब्रह्माकुमारीज़ की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी के पांचवें पुण्य स्मृति दिवस के उपलक्ष्य में शान्तिवन के डायमण्ड हॉल में आयोजित रक्तदान शिविर का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करने के पश्चात् समूह चित्र में संस्था की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी, ब्र.कु. हंसा बहन, संस्था के अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्र.कु. करूणा व राजयोगी डॉ. ब्र.कु. मृत्युंजय, ग्लोबल हॉस्पिटल के निदेशक ब्र.कु. डॉ. प्रताप मिड्ढा, तिरुपति बालाजी मंदिर के सीईओ वीर ब्रह्म, मेडिकल विंग के सचिव ब्र.कु. डॉ. बनारसी लाल, ब्र.कु. डॉ. सतीश गुप्ता, आबू रोड ट्रोमा सेंटर के ब्लड बैंक प्रभारी ब्र.कु. धर्मेंद्र, 200 से अधिक बार रक्तदान करने वाले भूपेन्द्र दवे,गुजरात तथा अन्य ब्र.कु. भाई बहनें। कार्यक्रम में आबू रोड सहित देश के विभिन्न हिस्सों से आए 381 रक्तदाताओं ने रक्तदान किया।

नवापारा राजिम-छ.ग.। राजिम संत सम्मेलन में डॉ. रमन सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. नारायण,ब्रह्माकुमारीज़ धार्मिक प्रभाग के ज़ोनल कोऑर्डिनेटर,इंदौर एवं ब्र.कु. पुष्पा।

मौदा-महा.। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र और स्वस्थ शक्ति मंदिर द्वारा आयोजित मेले का रिबन काटने के पश्चात् आरती पूजन करते हुए नागपुर क्षेत्र की संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. रजनी दीदी, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. मनीषा, भाजपा अध्यक्ष मोरादेश्वर सोरते, ज्ञान गंगा कॉन्वेंट के प्रिंसिपल बोबडे मैडम तथा अन्य।

अहमदाबाद-इंडिया कॉलोनी(गुज.)। म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन के पूर्व ज़ोन के डेप्युटी कमिश्नर विशाल खमाना को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. भानु बहन।

गांधीनगर-गुज.। गांधीनगर राजभवन में महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी से स्नेह मुलाकात करने के पश्चात् ईश्वरीय प्रसाद और सौगात भेंट करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ सेक्टर 28 गांधीनगर सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. कैलाश दीदी। साथ हैं सेक्टर 2/सी सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. भावना, ब्र.कु. जुग्नू, ब्र.कु. कृपल, ब्र.कु. आरती एवं ब्र.कु. पारूल।

छतरपुर-किशोर सागर(म.प्र.)। बागेश्वर धाम आगमन पर महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात करने के पश्चात् समूह चित्र में साथ हैं बागेश्वर धाम सरकार पीठाधीश्वर धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री, राजनेता मनोज तिवारी, छतरपुर सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. शैलजा दीदी, ब्र.कु. विद्या,खजुराहो, ब्र.कु. नन्दा,नौगांव, ब्र.कु. रमा,विश्वनाथ, ब्र.कु. रीना, ब्र.कु. कल्पना एवं ब्र.कु. रीमा।

अपना औरा पॉज़िटिव कैसे रखें...!!!

ब्र.कु. शिवानी बहन, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

योग मतलब ध्यान। ध्यान मतलब ध्यान से जीना। और ध्यान से ये जीना कि कुछ भी जो हमारे आस-पास हो रहा है, उसका दाग वो हमारे ऊपर नहीं आना चाहिए। तो उसके लिए हमें वो सिचुएशन से ऊपर रहना पड़ता है और जो भोगी जीवन है वो नीचे रहता है। मतलब एक ये हाई वायब्रेशनल लाइफ है और ये एक लो वायब्रेशनल लाइफ है। हम एक वायब्रेशन में रहते हैं। अगर इस समय हम सबकी चेकिंग की जाए मशीन से तो हम सबकी अलग-अलग वायब्रेशन्स आयेंगी। और इसकी इक्विपमेंट(उपकरण) है आजकल। जो हाइएस्ट वाइब्रेशन्स पर होते हैं, जिनके हम चित्र देखते हैं देवी-देवताएं, धर्म स्थापक उनके चारों तरफ एक व्हाइट रंग का सर्कल दिखाया जाता है। मतलब उनकी एनर्जी वाइट कलर की है। व्हाइट कलर का मतलब हाइएस्ट, प्युअरेस्ट। तो वो उनका औरा है वाइट।

ऐसे हम सब का भी एक औरा है। और हमारा औरा एक स्कैन है कि हमारी स्टेट ऑफ माइण्ड कैसी है? यहाँ कितनी प्युरिटी है या कितनी मैल है, मन कितना साफ है, बेदाग है या इसपर कितनी सारी बातों के वायब्रेशन्स हैं। जो मनचित्त को स्वच्छ रखेगा, बेदाग रखेगा, प्युअर रखेगा वो हाइअर वाइब्रेशन पर है। लेकिन जिसने मन पर हर चीज़ का दाग लगने दिया तो हमारी वायब्रेशन्स लो होने लगेगी। जब लोअर एनर्जी वायब्रेशन्स का हम पर दाग लगता जाएगा तो फिर हम कभी दर्द, कभी दु:ख, कभी चिन्ता, कभी डर, कभी गुस्सा, कभी हर्ट, कभी ईगो, कभी रिजेक्शन, कभी कम्पैरिज़न। ये सब लोअर वायब्रेशन्स एनर्जीज हैं। और जब हम इन लोअर वायब्रेशन्स एनर्जीज़ पर रहते हैं, हम सफर करते हैं और वो है भोगना। कहते हैं ये दु:ख भोग रहा है, भोगते हैं हम। तो एक है भोगी जीवन जो भोगते हैं(सफरिंग) और एक है योगी जीवन। अब इसका मतलब ये नहीं है कि जो योगी जीवन में होगा उसके सामने प्रॉब्लम्स नहीं आएंगी। प्रॉब्लम्स तो दोनों के सामने एक बराबर हैं। लेकिन योगी अर्थात् उस प्रॉब्लम को फेस करने का तरीका। इसका मतलब बाहर कीचड़ है, चलना तो सबने है लेकिन कोई ध्यान से चलेगा तो उसे अनटच्ड घर तक पहुंचेगा और कोई ध्यान से नहीं चलेगा तो पहले दो-तीन स्टेप्स में ही खुद को मैला कर लेगा।

तो आप रेडी हैं योगी जीवन पर शिफ्ट होने के लिए, पॉसिबल है? सिर्फ एक विजुअलाइज़ कीजिए कि आपने व्हाइट ड्रेस पहनी और सुबह से शाम तक आप बाहर हैं, काम कर रहे हैं, घर का काम कर रहे हैं, ऑफिस का काम कर रहे हैं, ट्रैवल कर रहे हैं, सब कुछ कर रहे हैं, इसको विजुअलाइज़ कीजिए। सुबह से शाम तक आप व्हाइट ड्रेस पहन कर बाहर हैं। क्या आप रात को वापिस वाइट को वाइट लेकर आ सकते हैं? सुबह जैसा व्हाइट था वैसा रात को भी व्हाइट चाहिए। सुबह वाइट है, बेदाग, फ्रेश, रात को भी वही व्हाइट में वापिस आना है। लेकिन सारे दिन में सारे काम करने हैं। अगर हमने काले रंग के कपड़े पहने हुए हैं तो कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि सारी मिट्टी भी लग जाए तो दिखाई नहीं देगी। काला ही इतना है, काले को और काला नहीं बनाया जा सकता।

जैसे ही हम व्हाइट की तरफ जाना शुरू करते हैं, अचानक से बहुत चीज़ें दिखाई देने लगती हैं कि वो ये भी है, ये भी है, वे भी है। जब तक काले बने होते हैं ना तो कुछ है ही नहीं। सब परफेक्ट है उसमें क्या? दुनिया ही ऐसी है, हम तो बहुत अच्छे हैं दुनिया से। लेकिन जब जर्नी ऑफ चेन्ज स्टार्ट होता है तो दिखाई देता है ओह! आज मैंने ये कर दिया, आज मेरे से ये हो गया, आज मेरे से वो हो गया। जैसे लगता है आज मेरे से बहुत सारी गलतियां होती है। एक्चुअली वो बहुत सारी गलतियां नहीं होती है वो पहले भी बहुत सारी होती थी लेकिन पहले वो गिनी नहीं जाती थी। पहले उसको हम जस्टिफाय करते थे उसने ऐसा किया तो मुझे वैसा करना ही था।

सुबह से रात तक व्हाइट ड्रेस पहनो और आप देखना आराम से वापिस आयेंगे बिना वो ड्रेस मैली हुए। और उसको सिर्फ जीवन जीने का तरीका बनाना है कि सुबह से पहनना है, रात को आना है, सबकुछ करना है लेकिन सबकुछ करते हुए सिर्फ एक अटेन्शन। ड्रेस ठीक रहनी चाहिए क्योंकि इसको रात तक मुझे ठीक रखना है। अब हम व्हाइट पहनते हैं, अगर किसी कुर्सी पर भी बैठते हैं तो पहले कुर्सी को चेक करते हैं। ब्लैक पहनो तो नहीं चेक करना पड़ेगा। इसका मतलब हम कहाँ जा रहे हैं, क्या कर रहे हैं, किससे मिल रहे हैं, कैसे मिल रहे हैं, क्या मुझे टच कर रहा है वो ध्यान रखना पड़ेगा।

इंदौर-सारंगपुर(म.प्र.)। रामनवमी के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में डॉ. गौतम जी टेटवाल,कौशल विकास रोजगार मंत्री,म.प्र. शासन,स्वतंत्र प्रभार, निलेश वर्मा,नगरपालिका उपाध्यक्ष, महेश पुष्पद,भाजपा नगर अध्यक्ष, डॉ. मोहनलाल शर्मा, डॉ. दीपक जोशी, अनिल गुप्ता को ईश्वरीय सौगात भेंट करने के पश्चात् साथ हैं ब्र.कु. भाग्यलक्ष्मी।

FOR ONLINE TRANSFER

Pay Directly to: osmorerf@indianbk

BANK NAME:- INDIAN BANK
BRANCH:- Shantivan,Talhati
ACCOUNT :- OM SHANTI MEDIA OF RERF
ACCOUNT NO:- 7552337300,
IFSC - CODE:- IDIB000S319

Note:- AfterTransfer send detail on

E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org
E-Mail - omshantimedia@bkivv.org

राजकोट-गुज.। राजकोट के पंचशील एवं रविरत्न सेवाकेन्द्र के 108 तपस्वी युगलों के सम्मान समारोह के उपलक्ष्य में आयोजित 'महकता गृहस्थ उपवन' कार्यक्रम में मंचासीन हैं ब्रह्माकुमारीज़ गुजरात ज़ोन की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. भारती दीदी, ब्र.कु. मीरा दीदी,मुंबई सांताक्रुज, ब्र.कु. अमर बहन,अहमदाबाद, ब्र.कु. नलिनी बहन,रविरत्न। मौके पर उपस्थित रहे रामकृष्ण मिशन के स्वामी प्रणवार्थनंदजी व शहर के गणमान्य विभूतियों आदि की भी उपस्थिति रही।

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़,शान्तिवन,तलहटी,

पोस्ट बॉक्स न-5,आबू रोड, राज. 307510

संपर्क- M- 9414006096, 9414154344, 9414182088

Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक - ₹-240, तीन वर्ष - ₹- 720, आजीवन - ₹- 6000

Website: www.omshantimedia.org

बिलासपुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ के शिव अनुराग भवन में समाज कल्याण विभाग के नशामुक्ति अभियान के तहत वार्ड पार्षदों के लिए आयोजित सम्मान कार्यक्रम में नवनिर्वाचित महापौर पूजा विधानी सहित समस्त वार्ड पार्षदों को सम्मानित करने के पश्चात् समूह चित्र में साथ हैं ब्र.कु. मंजू बहन।

अम्बिकापुर-छ.ग.। राष्ट्रीय सेवा योजना की राज्य स्तरीय सात दिवसीय विशेष शिविर में बौद्धिक सत्र के दौरान सभी स्वयंसेवकों को नशा मुक्त बनने के लिए प्रतिज्ञा कराते हुए विशेष आमंत्रित ब्र.कु. विद्या बहन।

खरबूजा मिठास के साथ दे अनेक फायदे

खरबूजा अपनी मिठास एवं स्वाद के लिए बहुत लोकप्रिय है। खरबूज के बीजों की गिरी से मेवा बनाया जाता है जिसका इस्तेमाल विभिन्न प्रकार की मिठाइयों में किया जाता है। आप भी खरबूजा का सेवन ज़रूर करते होंगे। आयुर्वेद के अनुसार, खरबूजा में कैल्शियम, आयरन, विटामिन ए और विटामिन सी अधिक मात्रा में होता है। इन गुणों के कारण खरबूजा के सेवन से शरीर को बहुत लाभ मिलता है। आइए जानते हैं कि आप खरबूज का प्रयोग कैसे कर सकते हैं।

खरबूजा के फायदे

मूत्र रोग (पेशाब से संबंधित रोग) में खरबूजा से लाभ

- पेशाब संबंधित समस्याओं में खरबूजे के फल का सेवन करना चाहिए। इससे मूत्र संबंधित सभी समस्याएं खत्म होती हैं।
- खरबूजे के बीज में मिश्री तथा काली मिर्च मिलाकर खिलाने से पेशाब की वृद्धि होती है तथा मूत्र विकार खत्म होते हैं।
- खरबूजे के बीज को पीसकर, दूध में मिला लें। इसे पीने से पेशाब की जलन की समस्या ठीक होती है।
- खरबूज के 5-10 ग्राम बीज चूर्ण में बराबर मात्रा में मिश्री मिलाकर खाने से पेशाब करते समय होने वाला दर्द दूर होता है।

किडनी विकार (गुर्दे का दर्द) में खरबूजा से लाभ

- खरबूज में पथरी को गलाने की शक्ति होती है। खरबूज के 5-10 ग्राम बीजों को पीसकर पानी में मिलाकर सेवन करें। इससे गुर्दे के दर्द से आराम मिलता है।
- इससे पथरी भी गलकर शरीर से बाहर निकल जाती है।
- खरबूजा गुर्दे की सफाई भी करता है।

शारीरिक कमज़ोरी में खरबूजा के सेवन से लाभ

- खरबूजे के बीज का रोजाना सेवन करें। इससे शरीर स्वस्थ होता है।
- इससे शारीरिक कमज़ोरी दूर होती है।

खरबूजा के सेवन से जुड़ी सावधानियां और नुकसान

- खरबूजा को खाने से पहले थोड़ी देर ठंडे पानी में डाल दें।
- भोजन के कुछ देर बाद ही खरबूजा का सेवन करना ठीक होता है।
- खरबूजा को खाली पेट या भोजन के पहले खाने से शरीर में पित-दोष यानी एसिडिटी होने की सम्भावना बढ़ जाती है। किसी-किसी को पित दोष के कारण होने वाला बुखार भी हो जाता है।
- खरबूजा बहुत ही ठण्डा और सुगन्धित होता है इसलिए जिनको बहुत ज़्यादा जुकाम तथा खाँसी होता हो या जिनकी पाचन क्रिया कमज़ोर हो, उन्हें खरबूजा नहीं खाना चाहिए।
- खरबूजा खाने के बाद पानी औद दूध का सेवन नुकसान पहुंचाता है।
- खरबूजा खाने के तुरंत बाद पानी पीने से हैजा होने की आशंका रहती है।

- प्रोटीन की अधिकता के कारण यह हड्डियों, बालों और नाखूनों के लिए भी फायदेमंद होता है।

एसिडिटी की समस्या में खरबूजे के सेवन से फायदा

खरबूजे के छोटे-छोटे टुकड़ों में देसी खांड मिलाकर शरबत बना लें। इसका नियमित सेवन करें। इससे शरीर में बढ़े हुए पित्त का प्रभाव घट जाता है। इससे पित्त के कारण होने वाले रोगों से आराम मिलता है। इससे एसिडिटी ठीक होती है।

तनाव से मुक्ति पाने में लाभकारी खरबूजा

तनाव का मुख्य कारण वात दोष का बढ़ना माना जाता है। खरबूजे में वात शामक गुण पाया जाता है जिसके कारण यह तनाव को कम करने में भी मदद करता है।

आँखों के लिए खरबूजा फायदेमंद

अगर आपको आँखों से संबंधित कोई समस्या है तो खरबूजा का सेवन आपके लिए फायदेमंद हो सकता है क्योंकि खरबूजा आँखों के लिए हितकर माना गया है।

अनिद्रा के उपचार में फायदेमंद खरबूजा

वात के अधिक बढ़ जाने के कारण नसों में विकार उत्पन्न होता है जिससे अनिद्रा की स्थिति उत्पन्न होती है। खरबूजे में वात शामक गुण होने के कारण अनिद्रा को दूर करने में मदद करता है।

नोट- यहाँ खरबूजा से होने वाले सभी फायदों के बारे में बहुत ही आसान शब्दों में लिखा गया है ताकि आप खरबूजा से पूरा-पूरा लाभ ले पाएं, लेकिन औषधि के रूप में खरबूजा का प्रयोग करने के लिए चिकित्सक की सलाह ज़रूर लें।

बैंगलोर-कोरमंगला। ब्रह्माकुमारीज़ कोरमंगला द्वारा आयोजित 'यह समय है' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए इंटरनेशनल मोटिवेशनल स्पीकर ब्र.कु. शिवानी, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. गीता दीदी, कर्नाटक के पूर्व उपमुख्यमंत्री डॉ. अश्वथ नारायण, भारतीय हॉकी टीम के पूर्व कप्तान पद्मश्री धनराज पिल्लई, प्रसिद्ध अभिनेत्री पूजा गांधी, खुफिया विभाग के एसपी डॉ. वेदमूर्ति तथा अन्य।

भोपाल-गुलमोहर कॉलोनी(म.प्र.)। प्रशासक, प्रबंधक एवं कार्यपालकों हेतु राज्यस्तरीय स्वर्णिम प्रशासन मध्य प्रदेश जागृति अभियान 'मन प्रबंधन द्वारा श्रेष्ठ प्रशासन' विषय पर समापन समारोह में दीप प्रज्वलित करते हुए क्षेत्रीय निदेशिका व ब्रह्माकुमारीज़ एडमिनिस्ट्रेशन विंग कोऑर्डिनेटर राजयोगिनी ब्र.कु. अवधेश दीदी, छतरपुर उपक्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. शैलजा दीदी, ब्र.कु. डॉ. रीना, मुख्यालय एडमिनिस्ट्रेशन विंग कोऑर्डिनेटर राजयोगी ब्र.कु. हरीश,माउंट आबू, महापौर मालती राय, प्रमुख सचिव उपाध्यक्ष सभा अविनाश प्रताप सिंह, आईएएस,निदेशक एवं नियंत्रण अधिकारी भावना वालिम्बे, आईपीएस हरिनारायणचारी, ब्र.कु. ऋचा, ब्र.कु. राहुल, ब्र.कु. राम तथा अन्य।

दमोह-फुटेरा(म.प्र.)। नीलकमल गार्डन में आयोजित संत सम्मेलन में शिवध्वज फहराते हुए महामंडलेश्वर कमल किशोर जी महाराज,दिव्य शक्ति अखाड़ा,सहारनपुर, महामंडलेश्वर राधे जी,जबलपुर, आचार्य गिरधारी लाल जी,रायबरेली, आचार्य पुष्पेन्द्र जी महाराज,चित्रकूट, श्री परमानंद जी,सतना, साध्वी अनीता, धार्मिक प्रभाग के ज़ोनल कोआर्डिनेटर राजयोगी ब्र.कु. नारायण,इंदौर, ब्र.कु. पुष्पा,नवापारा, ब्र.कु. लक्ष्मी,कटनी, ब्र.कु. विनीता,उपाध्यक्ष अखिल भारतीय सिंधी समाज, तथा अन्य।

लॉस एंजेलिस-यूएसए। शिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में राजयोगिनी ब्र.कु. गीता दीदी, ब्र.कु. विनो, ब्र.कु. सृष्टि तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

साक्षात्कार करने के बाद सबको विश्वास होता है और परमात्मा के करीब जाने का मन करता है। साक्षात्कार इतना आकर्षक था कि मेरा मन गदगद था और उसमें श्री कृष्ण और श्री विष्णु का साक्षात्कार करने के बाद तो मेरा मन एकदम आतुर हो गया, भगवान से मिलने को। एक तरह से आप कह सकते हैं मेरा जन्म साक्षात्कार से हुआ।

मेरे दिव्य अलौकिक जन्म का आधार साक्षात्कार

जब मैंने अपने साक्षात्कार की बात अपनी बहन को सुनाई, जो बाबा के पास जाती थी तो उन्होंने कहा चलो मैं ले चलती हूँ। एक बाबा है जो ज्ञान देता है और वहाँ का अनुभव तो बहुत अद्भुत होता है। जैसे ही मैं बाबा के पास पहुंची। मैंने देखा वहाँ, जैसे हमारे पांडव भवन में इन्द्रप्रस्थ के पास जहाँ मैं रहती थी इतना ही कमरा था, जहाँ बाबा गीता सुना रहे थे। आठ-दस बहनें वहाँ बैठी थी जो सुन रही थी। जब मैं वहाँ पहुंची तो उसी समय एक बहन को साक्षात्कार हो रहा था और वो बोल रही थी कि विमान जा रहा है, 'चलो विमान में चढ़ो-चढ़ो। वे शब्द दूर से ही सुनाई दे रहे थे मेरे कानों में। जैसे ही हम पहुंचे तो साक्षात्कार करने वाली बहन ने कहा कि विमान पर चढ़ो-चढ़ो। तो उस समय हमें अनुभव हुआ जैसे कि हमारा शरीर अलग है। ऐसा महसूस हुआ और लगा कि मैं भी उस विमान पर चढ़ के जा रही हूँ बाबा के पास। और मैं देखते ही देखते कहाँ खो गई यह पता ही नहीं चला कि उस समय रात्रि के दस बजे थे। जब मेरी आँख खुली तो देखा कि बाबा की गोदी में हूँ, इतनी देर हो गई कि बाबा कहने

लगे कि बच्चे कल आना।

बाबा का घर अलग था, जिसको यशोदा निवास कहते थे। ओम मण्डली उसी का बाद में नाम पड़ा। दूसरे दिन जब मैं बाबा के पास गई तो बाबा मेरे को उसी रूप में दिखाई देने लगे जो मैंने साक्षात्कार किया था। मुझे लगा मैं आत्मा भी लाइट होती जा रही हूँ, आकारी रूप लेती जा रही हूँ। बाबा भी ऐसा, मैं भी ऐसी, ऐसे देखते मुझे नशा चढ़ गया। तीसरे दिन मैं जब बाबा के पास गई तो मैंने मम्मा को देखा। मम्मा ने इंग्लिश गर्ल फ्रॉक पहना था क्योंकि मम्मा सिर्फ इंग्लिश का पीरियड लेती थी और वो गीत भी गाती थी। उस दिन मम्मा गीत बनाकर लाई थी और साथ में सितार भी लाई थी। जो गीत उन्होंने लिखा था उसके शब्द अच्छे थे और मम्मा का गला भी बहुत अच्छा था। उस गीत में मम्मा ने बाबा के साथ का अनुभव लिखा था कि मैंने बाबा को एक ऋषि की तरह देखा और उसने बाबा को सुनाया। मम्मा, बाबा के सामने बहुत साधारण वेश में आयी थी। बाबा ने कहा कि कुमारी को शादी करने से पहले वनवाह में बैठना होता है। बाबा ने कहा तुम वनवाह में हो। इसके बाद ही भगवान से शादी करनी है। इसके लिए तुम्हें अपना स्थूल श्रृंगार छोड़ नया श्रृंगार दिव्य गुणों का, शक्तियों का करना है। इसके बाद मुझे बाबा ने सात दिन का कोर्स कराया।

- क्रमशः

रायपुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ के शिक्षाविद सेवा प्रभाग के द्वारा ब्रह्मविद द ग्लोबल स्कूल भाठागांव में विद्यार्थियों को 'अनलॉक द हीरो विदिन यू' विषय पर सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. सौम्या। विद्यार्थियों बीच उपस्थित हैं ब्र.कु. सिमरन।

नवसारी-गुज.। ब्रह्माकुमारीज़ लोन्सी कुई द्वारा तपस्वी कुमार और अधर कुमार के सम्मान समारोह का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्रह्माकुमारीज़ संस्था की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी, महिला विंग की राष्ट्रीय समन्वयक राजयोगिनी ब्र.कु. शारदा दीदी, विज्ञान एवं इंजीनियरिंग विंग के राष्ट्रीय समन्वयक राजयोगी ब्र.कु. मोहन सिंघल, पूर्व अनुयायी पीयूष ब्रह्मा जी, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. गीता दीदी, ब्र.कु. हंसा बहन,माउंट आबू तथा अन्य।

खुशखबरी...

आ गई शिव संदेश और राजयोग कॉमेन्ट्री की नई कुंजी...

हम सभी जितने भी जिज्ञासु या आगंतुकों से मिलते हैं तो उस समय होता है कि कुछ इनको परमात्मा के बारे में बताया जाये,तो वैसे तो हम बताते ही हैं लेकिन उसके साथ-साथ कुछ लिखित सामग्री अगर दी जाये तो उसको पढ़कर उनके अंदर उसे जानने की जिज्ञासा और बढ़ जायेगी। इसी ध्येय को लेते हुए हमने 'परमपिता परमात्मा शिव का संदेश' और परमात्मा से सहज योग के लिए 'राजयोग मेडिटेशन कॉमेन्ट्री' की एक जेबी किताब या पॉकेट बुक डिज़ाइन किया है जो बहुत ही कारगर है। जिसमें परमात्मा का पूरा संदेश और उनसे मिलन मनाने की सहज विधि के लिए अभ्यास करने की कॉमेन्ट्री भी है। आप इसे ओमशान्ति मीडिया,शांतिवन से प्राप्त कर सकते हैं।

ओमशान्ति मीडिया,ब्रह्माकुमारीज़,
आनंद भवन,शांतिवन,आबू रोड(राज.-307510)
मो.- 9414154344, 9414006096, 9414182088
ई.मेल - omshantimedia@bkivv.org

इंदौर-ज्ञान शिखर(म.प्र.)। इंदौर ज़ोन की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी को उनकी सद्भावना, समर्पण, श्रेष्ठता और समाज सेवा के प्रति प्रतिबद्धता के लिए संस्था इंदौरियंस द्वारा मध्यप्रदेश का प्रतिष्ठित सम्मान 'इंदौरी रत्न' प्रदान कर सम्मानित करते हुए मिस इंडिया 2016 एवं मिस ग्लोब डिंपल पटेल,मुंबई। साथ हैं संस्था इंदौरियंस के अध्यक्ष रवि गुप्ता, उमा त्रिवेदी, डेली कॉलेज की प्राचार्या श्रीमती सोनल सिसोदिया, ब्र.कु. अनीता बहन, ब्र.कु. उषा बहन तथा अन्य।

छतरपुर-किशोर सागर(म.प्र.)। माधव क्रिकेट अकादमी के उद्घाटन पश्चात् समूह चित्र में भाजपा जिला उपाध्यक्ष अशोक युगल, श्री अन्नपूर्णा वामपंथी समिति के अध्यक्ष दुर्गेंद्र देव सिंह, अकादमी के संगीतकार मिश्रा जी, बंटी मिश्रा सहित मिश्रा परिवार के अन्य सदस्य, ब्र.कु. रीना तथा अन्य।

परमात्म ऊर्जा

जैसे साइंस रिफाइन होती जाती है, ऐसे अपने आप में साइलेन्स की शक्ति व अपनी स्थिति रिफाइन होती जा रही है? जब रिफाइन चीज़ होती है उसमें क्या-क्या विशेषता होती है? रिफाइन चीज़ जो होती हैं उनकी क्वांटिटी भले कम होती है लेकिन क्वालिटी पॉवरफुल होती है। जो चीज़ रिफाइन नहीं होगी उसकी क्वांटिटी ज़्यादा, क्वालिटी कम होगी। तो यहाँ भी जबकि रिफाइन होते जाते हैं तो कम समय, कम संकल्प, कम एनर्जी में जो कर्त्तव्य होगा वह सौ गुणा होगा और हल्कापन भी हो जाता। हल्केपन की निशानी होगी- वह कब नीचे नहीं आवेगा, ना चाहते भी स्वतः ही ऊपर स्थित रहेगा। यह है रिफाइन क्वालिफिकेशन। तो अपने में यह दोनों विशेषताएं अनुभव होती जाती हैं? भारी होने कारण मेहनत ज़्यादा करनी होती है। हल्का होने से मेहनत कम हो जाती है। तो ऐसे नैचुरल परिवर्तन होता जाता है। यह दोनों विशेषताएं सदा अटेन्शन में रहें। इसको सामने रखते हुए अपनी रिफाइननेस को चेक कर सकते हो। रिफाइन चीज़ जास्ती भटकती नहीं, स्पीड पकड़ लेती है। अगर रिफाइन ना होगी, कीचड़ा मिक्स होगा तो स्पीड पकड़ नहीं सकेगी, निर्विघ्न चल ना सकेंगे। एक तरफ जितना-जितना रिफाइन हो रहे हो, दूसरे तरफ उतना ही छोटी-छोटी बातें व भूलें व संस्कार जो हैं उनका फाइन भी बढ़ता जा रहा है। एक तरफ वह नज़ारा, दूसरे तरफ रिफाइन होने का नज़ारा, दोनों का फोर्स है। अगर रिफाइन नहीं तो फाइन समझो। दोनों साथ-साथ नज़ारे दिखाई दे रहे हैं। वह भी अति में जा रहा है और यह भी अति प्रत्यक्ष रूप में दिखाई देता जा रहा है। गुप्त अब प्रख्यात हो रहा है। तो जब दोनों बातें प्रत्यक्ष हों उसी अनुसार ही तो नंबर बनेंगे। माला हाथ से नहीं पिरोनी है। चलन से ही स्वयं अपना नंबर ले लेते हैं। अभी नंबर फिक्स होने का समय आ रहा है। इसलिए दोनों बातें स्पष्ट दिखाई दे रही हैं और दोनों को देखते हुए साक्षी हो हर्षित रहना है। खेल भी वही अच्छा लगता है जिसमें कोई बात की अति होती है। वही सीन अति आकर्षण वाली होती है। अभी भी ऐसी कशमकश की सीन चल रही है। देखने में मजा आता है ना। व तरस आता है? एक तरफ को देख खुश होते, दूसरे तरफ को देख रहम पड़ता। दोनों का खेल चल रहा है।

आज खेल दिखाया कि पर्दे पर क्या चल रहा है। वतन से तो बहुत स्पष्ट दिखाई देता है। जितना जो ऊंच होता है उनको स्पष्ट दिखाई देता है। जो नीचे स्टेज पर पार्टधारी उनको कुछ दिखाई दे सकता? कुछ भी दिखाई दे सकता? साक्षी हो ऊपर से सभी स्पष्ट दिखाई देता है। आज वतन में वर्तमान खेल की सीन देख रहे थे।

कथा सरिता

शत्रु का शत्रु मित्र होता

एक ब्राह्मण था। वह बहुत गरीब था और पूजा पाठ करके अपना घर चलाता था। उसके पास पहनने के लिए अच्छे कपड़े भी नहीं थे। एक बार एक यजमान ने ब्राह्मण की दरिद्रता देखकर उसे दान में दो बछड़े दे दिए। ब्राह्मण खुशी-खुशी बछड़ों को अपने साथ ले आया। ब्राह्मण बछड़ों का बहुत ख्याल रखता था, उन्हें समय पर चारा पानी देता था। कुछ समय बाद दोनों बछड़े बड़े हो गए और देखने में शरीर से काफी हष्ट-पुष्ट थे।

एक दिन एक चोर की नज़र उन बछड़ों पर पड़ी। चोर ने सोचा - " क्यों न इन बछड़ों को चुरा लूं। ये काफी हष्ट-पुष्ट हैं इन्हें बेच कर मुझे बहुत सारा धन मिल जाएगा। चोर ने दूसरे ही दिन बछड़ों को चुराने की योजना बना ली। चोर रात में अपने गाँव से चोरी करने के लिए निकल गया। जब वह रास्ते में था तभी उसे एक डरावना व्यक्ति मिला जो शरीर से बलशाली दिख रहा था। उसके बड़े-बड़े दांत बाहर निकले हुए और बाल बढ़े हुए थे। चोर उसे देख कर डर गया और चोर ने डरते हुए उसका परिचय जानना चाहा।

राक्षस ने बतलाया कि वह ब्रह्मराक्षस है। ब्रह्मराक्षस ने चोर से उसका परिचय पूछा और जानना चाहा कि इतनी रात में वह कहाँ जा रहा है। चोर ने बतलाया कि वह एक चोर है और ब्राह्मण के यहाँ बछड़ों की चोरी करने जा रहा है। चोर की बात सुनकर राक्षस बोला- "मुझे भी अपने साथ रख लो मैंने कई दिनों से खाना नहीं खाया है, मैं उस ब्राह्मण को खाकर अपना पेट भर लूँगा और तुम वहाँ बछड़े चुरा लेना। अगर तुम ऐसा नहीं करते तो मैं तुम्हें खा लूँगा।"

डर के कारण चोर ब्रह्मराक्षस को अपने साथ ले गया। दोनों ब्राह्मण के घर के पास जाकर छुप गए। तभी राक्षस ब्राह्मण को खाने के लिए जाने लगा। उसे जाता हुआ देखकर चोर ने उसे रोका और कहा - "तुम इस प्रकार जल्दबाजी करोगे तो ब्राह्मण जाग जायेगा और मैं बछड़े नहीं चुरा पाऊंगा इसीलिए पहले मुझे बछड़े चुरा लेने दो फिर तुम जाकर ब्राह्मण को खा लेना।"

दोनों एक-दूसरे की बात मानने के लिए तैयार नहीं हुए। इस प्रकार दोनों में तू-तू, मैं-मैं और झगड़ा होने लगा। दोनों के झगड़े की आवाज़ सुनकर ब्राह्मण जाग गया और उसे सारा माजरा समझ आ गया। ब्राह्मण ने पास रखी एक लाठी उठाई और दोनों को मारने लगा। लाठी खाकर चोर और राक्षस दोनों वहाँ से भाग गए।

शिक्षा : इस कहानी से हमें शिक्षा मिलती है कि दो शत्रुओं की लड़ाई से तीसरे का फायदा हो जाता है।

नवसारी-गुज.। प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज़ ईश्वरीय विश्व विद्यालय की सेवाओं को गुजरात में 50 वर्ष की गोल्डन जुबली एवं घर गृहस्थ में रहकर पवित्र जीवन जीने वाले युगलों के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए गुजरात क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. भारती दीदी, अहमदाबाद मणिनगर सबज़ोन निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. नेहा दीदी, उप-क्षेत्रीय संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. गीता दीदी व ब्र.कु. भानु बहन, विज्ञान एवं इंजीनियरिंग विंग के राष्ट्रीय समन्वयक राजयोगी ब्र.कु. मोहन सिंघल,माउंट आबू, भाजपा प्रदेश प्रमुख श्रीमती शीतल सोनी, नगरपालिका की पूर्व प्रमुख श्रीमती मीनल देसाई, स्नेह-सेतु चैरिटेबल ट्रस्ट की श्रीमती चेतना बिरला, एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी की बोर्ड मेंबर श्रीमती अमिता, उत्कर्ष मंडल की प्रमुख श्रीमती सुजाता पटेल, देव चौधरी तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

रतलाम-डोंगरे नगर(म.प्र.)। महापौर प्रहलाद पटेल को होली की शुभकामनाएं और उनके जन्मदिवस की बधाई देकर ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सविता। साथ हैं ब्र.कु. गीता एवं समाजसेवी राजेन्द्र पोरवाल।

इंदौर-न्यू पलासिया(म.प्र.)। अध्यात्म द्वारा सनातन संस्कृति की स्थापना विषय पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए क्षेत्रीय संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. आरती दीदी, पूर्व हाईकोर्ट न्यायाधीश ब्र.कु. बी.डी. राठी, एक तू ही जय गुरुदेव आश्रम के स्वामी श्री अरूणानंद जी महाराज, उज्जैन कबीर आश्रम की महामंडलेश्वर माया देवी, राम शंकर जी महाराज, महामंडलेश्वर साध्वी निर्मला जी, धार्मिक प्रभाग के ज़ोनल कोऑर्डिनेटर राजयोगी ब्र.कु. नारायण तथा अन्य अतिथिगण।

"मैं आत्मा हूँ"...यानी आत्मा में विश्वास...

राजयोगी ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

मैं आत्मा हूँ यह याद आने से परमात्मा अवश्य याद आयेगा। क्योंकि हमारे बाबा और हममें समानता है। जो उनमें शक्तियां हैं वो ही उनका प्रतिबिंब हम आत्मा में भी है। वो खुशियों का सागर है और हम भी खुश स्वरूप हैं। तब भला डिप्रैशन आने की मार्जिन ही कहाँ!

आत्म विश्वास है आत्मा में विश्वास, मैं आत्मा हूँ। अगर "मैं आत्मा हूँ" यह याद आया तो पिता परमात्मा ज़रूर याद आयेगा। जब यह विश्वास रहता है तो ठीक रहते हैं। जब यह भूल जाते हैं तो क्या नतीजा निकलता है? निराश, उदास हो जाते हैं। डिसअपाइंटमेंट(निराशा) क्यों होती है? क्योंकि हम आत्मा जो प्वाइंट हैं, उसको भूल जाते हैं। इसलिए बाबा कहते हैं, बच्चे, निराश मत होवो, हताश मत होवो। जैसे बच्चा मुझा जाता है, दुःखी हो जाता है तो उसके माँ-बाप कहते हैं, तुम तो लाडले हो, देखो, हमारी कितनी मिलकियत है! तुम ही तो मेरे वारिस हो। ये सब चीज़ें तुम्हारी हैं, वो चीज़ तुम्हारी, सब कुछ तुम्हारा है। इस प्रकार बच्चे का क्या-क्या है- यह याद दिलाकर उसको खुशी में लाते हैं।

बाबा भी हमें बताते हैं कि तुम क्या-क्या हो। क्या-क्या वर्सा तुम्हें मिल रहा है। अगर कोई व्यक्ति अपनी सम्पत्ति को तिजोरी में या लॉकर्स में बन्द करके रखे और बहुत दिनों तक देखे ही नहीं तो उसको भूल जाता है। अगर वह खोलकर बार-बार देखता रहे तो उसको खुशी भी होती है और नशा भी चढ़ता है कि मेरे पास यह भी है, वह भी है, मोती भी हैं, रत्न भी हैं। बाबा हमें याद दिलाता है कि तुम्हारे पास क्या खज़ाने हैं। हमें डिप्रैशन(उदास) में आने की ज़रूरत नहीं है। क्योंकि हम हैं ईश्वरीय सन्तान, परमात्मा की औलाद।

> **"अगर कोई व्यक्ति अपनी सम्पत्ति को तिजोरी में या लॉकर्स में बन्द करके रखे और बहुत दिनों तक देखे ही नहीं तो उसको भूल जाता है। अगर वह खोलकर बार-बार देखता रहे तो उसको खुशी भी होती है और नशा भी चढ़ता है कि मेरे पास यह भी है, वह भी है, मोती भी हैं, रत्न भी हैं। बाबा हमें याद दिलाता है कि तुम्हारे पास क्या खज़ाने हैं। हमें डिप्रैशन(उदास) में आने की ज़रूरत नहीं है। क्योंकि हम हैं ईश्वरीय सन्तान, परमात्मा के बच्चे। जब ये हमारे कॉन्शियस में गहरा बैठ जाता है तब भला डिप्रैशन का क्या स्थान रहेगा!"**

हम और डिप्रैशन- यह कैसे हो सकता है?

नेपोलियन कहता था कि 'असंभव' शब्द हमारे शब्दकोष में नहीं, मूर्खों के शब्दकोष में होता है। इसी प्रकार, डिप्रैशन शब्द ज्ञानियों के शब्दकोष में नहीं, अज्ञानियों के शब्दकोष में होता है। डिप्रैशन का कारण ईर्ष्या भी होती है। किसी को देखा कि यह मेरे साथ का है, यह क्या से क्या बन गया! मैं जैसे था वैसे ही रह गया। ऐसे जब सोचता है तो व्यक्ति को डिप्रैशन होता है कि मैं पिछड़ गया। लेकिन बाबा क्या कहता है? अपने को देखो, दूसरों को मत देखो। हमें अनुसरण करना है बाबा-मम्मा का। हम दूसरों के अनुयायी हैं क्या? हरेक का इस ड्रामा में अपना-अपना पार्ट है। अपनी-अपनी तकदीर है, अपना-अपना भाग्य है। यह वैरायटी ड्रामा है। एक न मिले दूसरे से। इसलिए, हम किसी से मुकाबला नहीं कर सकते और करना भी नहीं चाहिए।

बाबा कहते हैं, भले रेस करो लेकिन रीस नहीं करो। जब हम रीस अर्थात् ईर्ष्या करना शुरू करते हैं तो उसकी आग में जलते रहते हैं। तब डिप्रैशन आ जाता है। इन चीज़ों को हमें छोड़ना चाहिए। एक इच्छा पूरी हो जाती है तो दूसरी इच्छा पैदा हो जाती है। वो पूरी हो जाती है तो तीसरी पैदा हो जाती है। इच्छाओं का अन्त है ही नहीं। किसी ने कहा कि दुनिया मनुष्य की इच्छाएं हैं। वे सब पूरी हो जायें तो भी उसकी इच्छाएं पूरी नहीं होती क्योंकि फिर नयी इच्छाएं पैदा हो जाती हैं।

"हज़ारों ख्वाइशें ऐसी कि हर ख्वाइश में दम निकले।
बहुत निकले मेरे अरमान, फिर भी कम निकले।"

आदमी की ख्वाइशें पूरी होने वाली नहीं हैं। कितनी बड़ी-बड़ी ख्वाइशें हैं! वे सब छोड़ देनी चाहिए। मुझे कोई इच्छा नहीं, बाबा मिल गया तो सब मिल गया। मैं भरपूर हो गया। बाबा ने मेरी झोली भर दी। बाबा ही मेरा जहान है। ये सारी बातें बाबा ने हमको बताई हैं। हमारे डिप्रैशन के दिन समाप्त हो गये।

छतरपुर-चंदला(म.प्र.)। रामनवमी के पर्व पर आयोजित कार्यक्रम में रामदरबार की सुंदर झांकी को पूरे नगर में भ्रमण कराने के पश्चात् चित्र में विधानसभा क्षेत्र के वन एवं पर्यावरण राज्य मंत्री दिलीप अहिरवार, नगरपालिका उपाध्यक्ष अंशु शुक्ला, श्री राम सेवा समिति के नर्वदा प्रसाद गुप्ता, उपसेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. भारती तथा अन्य।

नवी मुंबई-ऐरोली(महा.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में नरेश मस्के,सांसद को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मीना व ब्र.कु. उषा। मौके पर उपस्थित रहे शिवसेना के उपप्रमुख विजय चौगुले, सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री सुषमा शिंदे तथा अन्य।

गांधीनगर-गुज.। ब्रह्माकुमारीज़ सेक्टर 28 में 'कृपया थोड़ा पानी हमारे लिए भी रखो ना' पंछियों की यह पुकार सुनकर गांधीनगर के पीस पार्क में पंछियों के लिए पानी रखने के लिए मिट्टी के कुंड का निःशुल्क वितरण कार्यक्रम में सभा को सम्बोधित करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. कैलाश दीदी। मंचासीन हैं गांधीनगर उत्तर विधायक रिटाबेन पटेल, नगर सेवक सोनालीबेन, ब्र.कु. रश्मीकांत आचार्य,पूर्व इसरो साइंटिस्ट व वर्तमान ट्रस्टी,ग्लोबल हॉस्पिटल, महानगरपालिका के नगरसेवक भरतभाई मनजीभाई गोहिल।

नवी मुंबई-वाशी(महा.)। सीआईएसएफ के सीबीडी बेलापुर प्रधान कार्यालय के अन्तर्गत 'सेल्फ एम्पॉवरमेंट टू नेशन एम्पॉवरमेंट' कार्यक्रम में उपस्थित रहे डीआईजी नीता सिंह, कमांडर धीरज कुमार, ब्र.कु. डॉ. ई.वी. गिरीश पटेल, ब्र.कु. शीला दीदी, ब्र.कु. मीरा तथा अन्य सीआईएसएफ के जवान।

सूरत-बालाजी रोड(गुज.)। प्रोग्रेस अलायंस के द्वारा इस कंपनी की 100 महिलाओं और ब्रह्माकुमारीज़ मोटावराछा सेंटर के सहयोग से गुजरात के सबसे बड़े पंडित दीनदयाल उपाध्याय इनडोर स्टेडियम में आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. शिवानी बहन,इंटरनेशनल मोटिवेशनल स्पीकर, ब्र.कु. डॉ. दामिनी, ब्र.कु. रंजन बेन, पूर्व सांसद दर्शना जारदोष तथा अन्य।

देगलूर-महा.। चिद्रावार मिल के विशाल ग्राउंड में आयोजित 'श्रीमद् भगवद् गीता ज्ञान से खुशनुमा जीवन' कार्यक्रम के पश्चात् शहर के पूर्व मुख्य अधिकारी बालाजीराव पाटिल खतगांवकर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए प्रेरक वक्ता ब्र.कु. श्रेया,मुम्बई। साथ हैं राजयोगिनी ब्र.कु. सुमंगला दीदी,बीदर, ग्लोबल पीस विलेज,बीदर की निर्देशिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुनंदा दीदी तथा देगलूर के तहसीलदार भारत सूर्यवंशी।

खजुराहो-म.प्र.। विश्व स्वास्थ्य दिवस के उपलक्ष्य में सेवाकेन्द्र द्वारा आयोजित 'स्वस्थ जीवन बेहतर भविष्य' कार्यक्रम के तहत निकाली गई रैली के दौरान उपस्थित रहे स्वास्थ्य विभाग के दिनेश सोनी, नगरिया प्रोविजन की मालकिन रानी नगरिया, नगरिया मेडिकल से लक्ष्मी नगरिया, इलेक्ट्रिकल्स व्यापारी प्रमोद विश्वकर्मा, बीज भण्डार के व्यापारी रमेश नगरिया, ब्र.कु. विद्या तथा अन्य।

मुंबई-घाटकोपर(महा.)। ब्रह्माकुमारीज़ घाटकोपर सबज़ोन के योग भवन में गुड़ी पड़वा, उगादि, चैती चांद, चैत्र नवरात्रि के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में भारत की प्रसिद्ध रेडियो सिटी 91.1एफएम की आरजे अर्चना, घाटकोपर सबज़ोन अतिरिक्त निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. शकु दीदी, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. विष्णुप्रिया बहन तथा अन्य।

रीवा-म.प्र.। 'राष्ट्रीय नशा मुक्ति संकल्प' कार्यक्रम में उपस्थित रहे ब्र.कु. शालिनी, ब्र.कु. संगीता, ब्र.कु. अनुसुइया, ब्र.कु. राकेश, ब्र.कु. महेश, मध्य प्रदेश में नशा मुक्त भारत के ब्रांड एंबेसडर ब्र.कु. दीपक तिवारी तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

सटाना-महा.। विश्व स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर ब्रह्माकुमारी, स्वराधना और हैप्पी हार्ट ग्रुप के संयुक्त रूप से आयोजित कार्यक्रम में डॉ. उज्जवल कापडनीस, ब्र.कु. अंजूलता, ब्र.कु. सोनू, स्वराधना ग्रुप के अध्यक्ष कीर्ति भांगड़िया आदि की उपस्थिति रही।

देने वाला केवल एक है...

– ब्र.कु. अनुज भाई,दिल्ली

हम जब किसी आउट स्टेशन पर जाते हैं, किसी स्थान पर जाते हैं, किसी से मिलने जाते हैं या किसी पार्क में जाते हैं, किसी बीच पर जाते हैं तो हमको अच्छा लगता है। हमें ऐसा लगता है कि हमें अच्छा लगा लेकिन आपको ये पता होना चाहिए कि आपने वहाँ पर अपनी ऊर्जा दी तो उसने आपको अच्छा फील कराया। अच्छा नहीं लगा। हमने कुछ दिया तो वहाँ से मिला। ऐसे ही जहाँ कहीं हम जाते हैं तो अपनी आँखों से कुछ देखते हैं, अपनी आखों से अपनी ऊर्जा देते हैं तो चाहे वो पार्क हो, चाहे बाहर का आसमान हो, चाहे बीच हो, चाहे हिल स्टेशन हो हर जगह आपको अच्छा लगता नहीं है। आप वहाँ पे करते हैं, आखों से उसको ऊर्जा देते हैं, कुछ पे किया तो वहाँ से आपको अच्छा फील हो गया। इसका मतलब क्या हुआ कि हम सभी इस प्रकृति से कुछ भी फील अच्छा नहीं करते हैं, हमको वहाँ पर कुछ पे करना पड़ता है।

इसीलिए हर दिन इतना कुछ आउटिंग करने के बाद भी, बाहर जाने के बाद भी, घूमने के बाद भी हम अपने आप में संतुष्ट फील नहीं करते। क्योंकि संतुष्टता तो तब हो ना जब हम वहाँ जाकर उससे खुश हो जाएं, भरपूर हो जाएं, वो हमारे अन्दर बैठ जाए, लेकिन नहीं हो पा रहा है। इसका अर्थ क्या हुआ कि हमारी ऊर्जा बस जाये जा रही है, वो इक्ट्ठी नहीं हो रही, कलेक्ट नहीं हो रही है। इसीलिए परमात्मा एक ऐसा सहारा है जो हमारे लिए जमा करने का काम करता है। तो आत्मा शरीर के साथ जुड़ी हुई है और शरीर प्रकृति से बना हुआ है। प्रकृति जोकि बाहर की चीज़ों से कनेक्टेड हो गई है, तो हम जाते तो हैं लेकिन वहाँ जाने के बाद भी अच्छा-बुरा फील करते हैं क्योंकि आत्मा को तो अच्छा-बुरा लगता ही नहीं। शरीर के साथ जुड़े होने के कारण वो थोड़ी देर के लिए फील करती है।

तो हमारा जो पहला ज्ञान है यहाँ का कि आत्मा, शरीर से अलग एक शक्ति है, तो आत्मा-शरीर दोनों के कनेक्शन को हमको समझ के आगे बढ़ना है। अब इसमें शक्ति कहाँ से आयेगी? केवल एक परमात्मा ही है जो हमको हर पल देने का काम करता है। बाकी सब लोग हमसे ले रहे हैं। इस प्रकृति से जुड़ी हुई हर एक चीज़ हमको लॉस कर रही है, खत्म कर रही है क्योंकि उससे हम कनेक्ट होके दे रहे हैं। मतलब उस एनर्जी को हम फील करते हैं तो हमको लगता है कि हमें अच्छा लगा, नहीं हमने पे किया। तो परमात्मा इसीलिए कहते हैं कि हम ज्ञान-योग इतने समय से करते हैं लेकिन हमारी ऊर्जा नष्ट क्यों हो रही क्योंकि हम सारा समय जो प्रकृति से जुड़ी हुई चीज़ें हैं उनके साथ एनर्जी हमारी चली जा रही है। चाहे वो देह में जाये, चाहे देह के सम्बन्धों में जाये, चाहे देह के पदार्थों में जाये लेकिन जा रही है। इसीलिए हमारी ऊर्जा जमा नहीं हो रही है। तो देने वाला सिर्फ एक ही है इस वर्ल्ड में। बाकी सब हमसे लेने वाले हैं।

तो अगर अपनी ऊर्जा को बचाना है तो आपको इन सारी चीज़ों से ऊपर उठना पड़ेगा। इन सारी चीज़ों से ऊपर उठने के बाद आपकी स्थिति अलग होगी। उदाहरण, जैसे हम सभी बीच-बीच में नर्वस हो जाते हैं, बीच-बीच में थोड़ा अच्छा फील नहीं करते हैं तो उसका रिज़न यही है कि जैसे परमात्मा के घर में जायें या परमात्मा से कनेक्ट हो योग लगाएं तो लगाने के बाद भी जैसे लगता है ना कि मैंने कुछ हासिल नहीं किया, जैसे कुछ अलग नहीं हो रहा, कुछ अच्छा नहीं हो रहा है, जिसका रिज़न यही है कि जो मैं कर रहा हूँ ना ज्ञान-योग वो बाहर की प्रकृति में चला जा रहा है। चाहे वो देह, देह के सम्बन्धी या देह के पदार्थ हों। तो अपने आपको अलर्ट करके इस बात के लिए थोड़ा-सा ध्यान देने की आवश्यकता है कि मैं क्यों अपनी ऊर्जा को इसमें नष्ट कर रहा हूँ। बचाऊं क्यों नहीं ! इसीलिए शिव निराकार परमात्मा रोज़ हमको सिखाते हैं कि अपने इन्द्रियों पर कन्ट्रोल करो, प्रकृतिजीत बनो, देह, देह के सम्बन्धों को भूलो। अब वो बात समझ में आती है कि हमारी ऊर्जा जा कहाँ रही है! बाकी सब लेने वाले हैं, शिव परमात्मा ही देने वाला है। तो इस भाव को पकड़ कर अगर हम चलें तो शायद कुछ दिन में हमको भी उन्नति फील हो, हमें भी अच्छा लगे।

मन की बातें

- राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

प्रश्न : यदि कुमारी जीवन में भी हमसे कोई छोटी या बड़ी गलती हो जाती है तो उसका प्रायश्चित क्या है? क्या प्रायश्चित के बाद भी उसकी सज़ा मिलेगी?

उत्तर : बिल्कुल क्लीयर नॉलेज बाबा की है, ज्ञान में आने से पहले कुछ हो गया है, बाबा को सुना दो, ऊपर अपने सुप्रीम फ्रेंड को। हल्का हो जायेगा मन। क्योंकि सजायें मिलना और न मिलना मुरलियों में आजकल बहुत आ रहा है, सजायें माफ नहीं होती। मन हल्का अवश्य हो जाएगा और मन हल्का हो जाएगा तो तुम अच्छा अभ्यास, साधनाएं कर सकेंगे। ज्ञान में आने के बाद कोई गलती कर ली है तो वो निश्चित रूप से मन को बार-बार कचोटती रहेगी। वो भी अब और तो कोई तरीका नहीं है। बाबा को सुनायें और क्षमा-याचना लें। 108 बार रोज़ सवेरे उठकर लिखें मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ ये प्रिंट होगा और वो डिलीट होगा। बाबा की बहुत मदद मिलेगी। माफ नहीं होती, बाबा की मदद मिलती है। बाबा हमें अपनी शक्तियां देता रहेगा। तो हम आगे बढ़ते रहेंगे।

प्रश्न : कई बार मैं बहुत अकेला महसूस करती हूँ, मैं ऐसा क्या करूं कि बाबा मेरे इस अकेलेपन को दूर करे? कई बार इच्छा होती है कि हम किसी के कंधे पर सिर रखें, किसी को हग करें, किसी की गोद में सिर रखें। मतलब स्थूल में नहीं, लेकिन फिर भी एक इच्छा रहती है अन्दर तो बाबा क्या ऐसी हमारे अकेलेपन को दूर कर सकते हैं? ऐसा अहसास कैसे किया जाये?

उत्तर : बिल्कुल कर सकते हैं क्योंकि फिज़िकली अगर आप किसी के साथ ये करते हैं तो आप तो ये इम्प्युरिटी में बदल जाता है। और ये जो लॉनली फीलिंग होती है या थोड़ा डिप्रैशन फील होता है, एलोन लगता है अपने को, ये इम्प्युरिटी का ही प्रभाव होता है। जब कई बार सोके उठते हैं, दिन में सो जायें तो उठते ही बिल्कुल उदास मन होगा। ये इम्प्युरिटी ही है इसके लिए मुरलियों का अध्ययन करना, बाबा को याद करना, बाबा से बातें करते रहना और वही जो ये करना चाहती हैं सूक्ष्म वतन में जाकर बापदादा के साथ करने लगें तो अनुभव कुछ ही दिनों में दस गुणा होने लगेंगे। वो जो इच्छाएं हैं वो समाप्त हो जाएंगी।

प्रश्न : मैं पिछले नौ साल से ज्ञान में हूँ। अब मेरा योग में मन नहीं लगता है। कई बार पुरानी दुनिया में जाने की इच्छा होती है। तो मैं कन्फ्यूज़ड हूँ कि कैसे मैं अपने आप को सम्भालूं?

उत्तर : उत्तर मैं बिल्कुल क्लीयर देना चाहता हूँ बिना छुपाये। अन्दर में इम्प्युरिटी बहुत बढ़ रही है इसलिए योग नहीं लग रहा है। फिर से अपनी प्युरिटी को रिवाइज़ करें। बाबा के सामने बैठें और उससे बातें करें। अपने स्वमान को बढ़ायें। और योग नहीं लगता तो कुछ दिन योग छोड़के पाँच स्वरूपों का अभ्यास करें, मुरलियों का अध्ययन करें। और थोड़ा चिंतन करके इम्पोंटेंट प्वांइट लिखें। स्वमान से, पाँच स्वरूपों से और ज्ञान के बल से योग लगने लगेगा और ये इम्प्युरिटी खत्म हो जायेगी। फिर जो दुविधा रहती है क्योंकि अब समय ऐसा आ गया है अब अगर कोई चूक गया तो पश्चाताप के अलावा कुछ हाथ नहीं लगेगा क्योंकि समय बहुत तेजी से बिगड़ेगा। युग तेजी से बदलेगा। हर साल हम नये-नये सीन देखेंगे।

प्रश्न : क्या बाबा के बनने के बाद अच्छा पहनना, खाना, अच्छा सामान यूज़ करना व घूमना ईश्वरीय मर्यादाओं के प्रतिकूल है?

उत्तर : प्रतिकूल तो कुछ नहीं है लेकिन अनुकूल भी नहीं है। क्योंकि अगर आप ये करते हैं तो आप बाहर जायेंगे और बाहर की हवा तो लग जायेगी। फिर वही प्रश्न होगा जो पहला प्रश्न था कि ये होता है, ये होता है। एक बहुत सारी चीज़ें इकट्ठी आप रखेंगे, जहाँ संग्रह वृत्ति बहुत होती है तो वहाँ एकाग्रता विक पड़ जाती है। बहुत सुन्दर-सुन्दर पहनेंगी तो दूसरों की दृष्टि आप पर जायेगी। फिर वही प्रश्न आयेगा कि दूसरों की दृष्टि हम पर जाती है। इसलिए योगिनी बन जाओ, त्यागी और तपस्विनी बन जाओ। सारा संसार आपकी रूहानियत की ओर आकर्षित होगा, कपड़ों की ओर आकर्षित क्या करना है !

प्रश्न : मुझे बचपन से ही ना माता-पिता का प्यार मिला और न ही अच्छी परवरिश, जिस कारण डिप्रेस्ड होकर गलत काम मुझसे हो गये। ज्ञान में आने के बाद भी मैं उनको माफ नहीं कर पा रही हूँ। मैं क्या पुरूषार्थ करूं कि पिछली बातों को सब भूला दूँ?

उत्तर : देखिए ये गलतियां बहुतों से हुई हैं इनको भी मैं धन्यवाद दूंगा कि इन्होंने प्रश्न करने का साहस किया है। पर ये गलती बहुत लोगों से हो रही है, कुमारों से भी हो रही है, कन्याओं से भी हो रही है। प्यार नहीं मिलता तो किसी के भी प्यार में अटक जाते हैं क्योंकि प्यार की एक प्यास बनी रहती है अन्दर में कि कोई उन्हें प्यार करे। लेकिन कलियुग में सच्चा प्यार कहीं नहीं है। सब जगह प्यार में धोखा है। प्रश्न ओपनली पूछा है तो उत्तर भी ओपनली है। जो आपको प्यार कर रहा है वो दो-चार को और कर रहा है। जब आपको ये पता चलेगा तो आपका हाल बहुत बिगड़ जायेगा। जो कुछ भी हो गया है पास्ट इज़ पास्ट। अब तपस्या में लग जाओ। अपने को योगिन बना दो। और स्टडी करो ज्ञान की। जो पुरूषार्थ के तरीके बताए हैं यही तरीके हैं कोई लम्बे-चौड़े नहीं हैं। मुरलियों में बहुत अच्छी-अच्छी साधनाओं की बातें आती रहती हैं। बहुत बड़ी साधनाएं भी नहीं हैं बिल्कुल सिम्पल-सिम्पल हैं। केवल हमें प्रैक्टिस करनी हैं तो पास्ट डिलीट हो जायेगा। और पवित्रता की चमक से और परमात्म प्यार से आप आत्म संतोष से भरपूर हो जायेंगी। फिर किसी और का प्यार पाने की इच्छा नहीं रहेगी।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

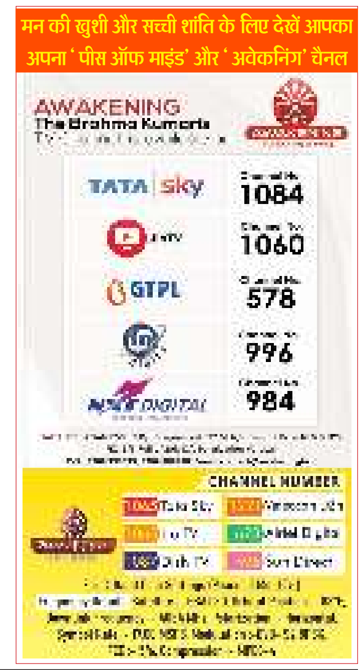

लास्ट सो फास्ट कैसे जायें?

त्याग क्यों करें?

वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

लास्ट सो फास्ट जाने वालों के लिए कुछ और सहज पुरूषार्थ की विधियां हैं। यदि सचमुच सच्चे दिल से आपके मन में लगन है, (सच्चे दिल के लगन की बात कर रहे हैं) कि मैं लास्ट में आया हूँ/आयी हूँ। मुझे बाबा से सब कुछ प्राप्त करना है। बहुत दिनों से भगवान से मिलने की इच्छा थी, बहुत भक्ति की थी। अब उसे मिलन हो रहा है तो ये मिलन निरन्तर होता रहे, आत्मा अतिन्द्रिय सुखों का भण्डार बन जाए, मुझे अब ये करना है। यदि सच्चे दिल का ये संकल्प है, तो ध्यान देंगे बिना त्याग के बड़ी प्राप्तियां नहीं हुआ करती, इसलिए अपने को त्याग करने के लिए तैयार करो।

आप सब जानते हैं यहाँ घरबार, बाल-बच्चों की त्याग करने की ज़रूरत नहीं है। यहाँ त्याग करना है अपनी उन सूक्ष्म कमज़ोरियों का, जो हमारी साधनाओं के मार्ग में बाधाएं हैं। जैसे बहुत सारी सांसारिक इच्छाएं। कर्म करते-करते ऐसी स्थिति पर आ जाओ, हमें कुछ नहीं चाहिए, अब सब कुछ एक शिवबाबा से लेना है। इस संसार से हमें कुछ नहीं चाहिए, इसको सर्वस्व त्याग कहेंगे। सोच लो आप इसके लिए तैयार हैं?

दूसरा त्याग- कर्मेन्द्रियों के रसों का त्याग। पहले कोई खाने-पीने में रहते थे, कोई व्यर्थ सुनने में रहते थे, किसी को बहुत कुछ देखने का शौक था, कोई बहुत पढ़ाई भी करते रहते थे, सारी दुनिया की नॉलेज ले रहे हैं। किसी को कहीं इन्ट्रेस्ट था, किसी को कहीं। अब अपने को अन्तर्मुखी करना है। पढ़ाई तो स्वयं भगवान पढ़ा रहा है जो सभी विद्याओं का सार है। राजयोग की विद्या संसार के सभी विद्याओं का सार है। भगवान से शक्तियां लेने के बाद और कुछ जानने की इच्छा नहीं रहती। सुनना है तो सुनो भगवान को। (जो मुझे सुनेंगे तो वो कहेंगे क्या बात कर रहे हैं बड़ी-बड़ी? कल्पना

यहाँ त्याग करना है अपनी उन सूक्ष्म कमज़ोरियों का, जो हमारी साधनाओं के मार्ग में बाधाएं हैं। जैसे बहुत सारी सांसारिक इच्छाएं। कर्म करते-करते ऐसी स्थिति पर आ जाओ, हमें कुछ नहीं चाहिए, अब सब कुछ एक शिवबाबा से लेना है।

लगती है।) भगवान को सुनने का समय चल रहा है, वो सत्य ज्ञान दे रहा है, उसकी वाणी चल रही है। ये ज्ञान देकर वो हमें राह दिखा रहा है, उसकी सुनो। त्याग करना है तो एक व्यर्थ की इच्छाओं का, अच्छी इच्छाओं का नहीं। एक कर्मेन्द्रियों के रसों का। साथ में जोड़ दें आलस्य और अलबेलेपन को। सवेरे उठने में आलस आता है। कोई एक बहन कल आई। मैं आठ बजे उठती हूँ सोके। बहुत प्रतिज्ञाएं कर ली चार बजे उठने की, सफल ही नहीं हुई। मैंने उससे पूछा कितने बजे सोती हो। कहा- दस बजे। मैंने कहा कि दस बजे सोके, चार बजे उठना इस आयु में तो सहज बात है। अच्छी आयु थी 40-45 साल की, तुम्हें कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए। अलार्म नहीं लगाती हो क्या? अलार्म लगा लिया करो। कहा कुछ सुनता नहीं। ऐसी नींद आती है कि जैसे कि बस मर गई हूँ, कुछ सुनाई नहीं देगा। मैं समझ गया कि इसका कारण होता है कुछ। ब्रेन की डलनेस, ऑक्सीजन की कमी और सूक्ष्म विकर्मों का बोझ भी। जो आत्मा को सवेरे-सवेरे का ईश्वरीय सुख नहीं लेने देता।

तो बहुत ध्यान दें, जल्दी सोना, जल्दी उठना इसको अपना नियम बना लें। भगवान सवेरे-सवेरे अमृत बांटता है, वरदान बांटता है, सुख-शान्ति, खुशी-प्रेम का अनुभव कराता है, अपनेपन की फीलिंग देता है। भगवान ही हमारा है। हम उसके भक्त नहीं, हम तो बहुत प्यारे-लाडले बच्चे हैं ये वो फीलिंग देता है।

तो जिसको लास्ट सो फास्ट जाना है वो इस चीज़ पर बहुत ध्यान दें कि हमें सवेरे उठके परमात्म मिलन का सुख लेना है, उसको शुक्रिया किया करें तो उसके प्यार में मन मगन होता रहेगा। उससे क्षमा-याचना भी कर लें ज़्यादा पाप कर लिए हों। ज़्यादा विषयी जीवन रहा हो, ज़्यादा गड़बड़ कर ली हो जीवन में, कइयों ने की है बहुत गड़बड़, वो गड़बड़ करने वाले सब जानते हैं, हमने क्या-क्या गड़बड़ की। एक तो उसे भूलाना पड़ेगा, तो ये चीज़ें भूलना सहज भी नहीं होता है, यह भी सत्य है। भूलाना तो पड़ेगा। लेकिन आगे ऐसा कुछ न हो ये प्रतिज्ञा भी करनी पड़ेगी। - क्रमशः

नासिक-महा.। गुरूदक्षिणा ऑडिटोरियम में आयोजित 13वें अंतर्राष्ट्रीय नासिक फिल्म महोत्सव में बेस्ट फिल्म ऑफ द ईयर 2025 'महामहिम दीदीजी मुर्मू' के लिए फिल्म के राइटर और डायरेक्टर ब्र.कु. पंपोश मिश्रा व प्रोड्यूसर ब्र.कु. प्रभा मिश्रा,माउंट आबू को 'दादा साहेब फाल्के' अवॉर्ड से सम्मानित करते हुए महाराष्ट्र के शिक्षा मंत्री दादाजी भुसे। साथ हैं महामहिम दीदीजी मुर्मू का किरदार निभाने वाली संपा मंडल जिन्हें बेस्ट एक्ट्रेस अवॉर्ड से सम्मानित किया गया।

नवी मुंबई-ऐरोली(महा.)। महावीर जयंती के अवसर पर श्री 1008 अजितनाथ दिगंबर जैन मंदिर,ऐरोली सेक्टर 19 में आयोजित शान्तिरैली कार्यक्रम में अपनी शुभकामनाएं व्यक्त करते हुए संजीव नाइक साहब,पूर्व सांसद,ठाणे। साथ हैं ब्र.कु. मीरा, ब्र.कु. उषा, सुचित्रा मैडम,विभागीय उपसंचालक, दिनेश पारेख,भाजपा कार्यकर्ता तथा अन्य।

पणजी-गोवा। पणजी के निकट कैलापुर गांव में ब्रह्माकुमारीज़ के वैश्विक ध्यान केन्द्र का शिलान्यास भूमि पूजन करते हुए विधायक रोडोल्फो लुइस फर्नांडीस। साथ हैं ब्र.कु. सुनंदा,पुणे, क्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु. शोभा, कैलापुर पंचायत सरपंच श्रीमती जेनिफर ओलिविएरो, पीडीए अधिकारी अशोक कुमार, परियोजना वास्तुकार राजेश केंकरे, लंदन से चिकित्सा सलाहकार डॉ. रे भट तथा अन्य।

राजकोट-रविरत्न पार्क (गुज.)। घर बने मंदिर परिसंवाद का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. गीता,भीनमाल, ब्र.कु. नलिनी, ब्र.कु. अंजू तथा अन्य।

अम्बिकापुर-छ.ग.। सरगुजा पुलिस एवं सरगुजा जिले के स्वैच्छिक संगठनों के संयुक्त तत्वावधान में संचालित नवा बिहान नशामुक्ति जागरूकता अभियान एवं ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र चोपड़ा पारा द्वारा ग्राम दरिमा में नशामुक्ति जागरूकता रैली एवं कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

अव्यक्त मुरली 11-03-2002 (पहेली-17)2024 -25

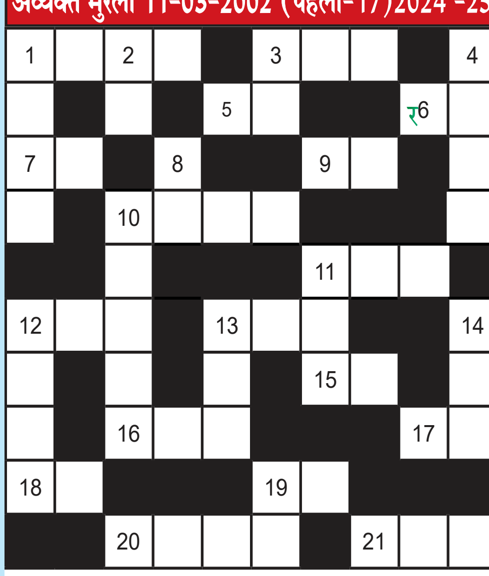

ऊपर से नीचे

1. किसी भी प्रकार का ....., चाहे ज्ञान का, चाहे योग का, चाहे सेवा का, चाहे बुद्धि का, चाहे कोई गुण का, जिसमें भी ..... होगा उसकी निशानी है- उसको अपमान बहुत जल्दी फील होगा।(4)
2. आदि से, स्थापना के समय से अब विनाश के समीप समय तक कौन-कौन से बच्चे अमर भव के वरदानी रहे हैं! उन्हों की ..... बना रहे थे।(2)
3. आजकल के यादगार में भी गुरू कहलाने वालों को ..... वचन महाराज कहा जाता है। चाहे झूठ भी बोल रहे हों लेकिन भक्त कहते हैं सत वचन।(2)
4. टीचर्स अर्थात् अपने फीचर्स द्वारा बाप का ..... कराने वाली।(4)
8. बापदादा ने अपने हस्तों से शिव ध्वज फहराया, ... काटी और सब बच्चों को बधाइयाँ दी।(2)
10. जैसे गुरू की गद्दी होती है ना तो यह मुरली का तख्त, मुरली धारण कराना और मुरली सुनाना। सुनाना सिर्फ नहीं लेकिन मुरली धारण कराना, यह टीचर्स को बापदादा ने गुरूभाई का तख्त दिया है और फारेन में तो देखा जाता है कि बहुत जल्दी से जल्दी ..... हो जाते हैं।(5)
11. आज आदि से, स्थापना के समय से अब ..... के समीप समय तक कौन-कौन से बच्चे अमर भव के वरदानी रहे हैं!(3)
12. आजकल के यादगार में भी गुरू कहलाने वालों को सत वचन ..... कहा जाता है।(4)
13. दादियां तो एक फारेन रहती है एक मधुबन रहती है लेकिन हर स्थान पर ..... रूप में निमित्त टीचर्स है या निमित्त पाण्डव है।(3)
14. बापदादा कहते हैं ..... अर्थात् अपने फीचर्स द्वारा बाप का साक्षात्कार कराने वाली।(3)
19. बहुत-बहुत सेवा की मुबारक हो। अच्छी सेवा करते हैं और ..... प्रतिदिन अनुभवी भी बनते जाते हैं।(2)

बायें से दायें

1. किसी भी प्रकार का अभिमान, चाहे ज्ञान का, चाहे योग का, चाहे सेवा का, चाहे बुद्धि का, चाहे कोई गुण का, जिसमें भी अभिमान होगा उसकी निशानी है - उसको ..... बहुत जल्दी फील होगा।(4)
3. बाप का बनने से विशेषताओं के खज़ाने के अधिकारी बन जाते हो। एक दो विशेषतायें नहीं हैं, बहुत विशेषतायें हैं। जो यादगार में भी आपकी विशेषताओं का वर्णन है- 16 कला सम्पन्न, तो सिर्फ 16 नहीं हैं, 16 माना .....।(3)
5. हर एक ब्राह्मण आत्मा की विशेषता देख-देख हर्षित हो रहे हैं। दिल ही दिल में ..... गा रहे हैं- वाह बच्चे वाह!(2)
6. सुरक्षा, बचाव, संरक्षण।(2)
7. सम्मान, इज्जत, प्रतिष्ठा।(2)
9. अमृतवेले से वतन में अगर चारों ओर के कार्ड, ..., ई-मेल, संकल्प सब इकट्ठे करो तो देख -देखकर बड़ा मजा आयेगा।(2)
10. किस्मत, नसीब, भाग्य।(4)
11. यह बर्थ डे सारे कल्प में इस संगमयुग में ही मनाते हैं। सतयुग में भी ऐसा अलौकिक जन्म दिन नहीं मनायेंगे। वहाँ भी ऐसा ..... जन्म दिन नहीं होगा, जो बाप और बच्चों का एक ही साथ जन्म हो।(3)
12. भक्त कहते हैं सत वचन। तो यह आपके वचन का गायन है। महाराज, ... तो आप ही बनते हो ना! इसीलिए सत वचन महाराज माना ..... आत्मायें।(3)
13. परमात्म देन समझने से विशेषता में परमात्म शक्तियाँ भर जाती हैं। मेरी कहने से अभिमान और अपमान दोनों का ..... करना पड़ता है।(3)
15. डबल फारेनर्स के तीन ग्रुप हैं ना?(अन्तर्मुखी, मस्ताना, ... ग्रुप)(2)
16. सारा कल्प विश्व की सर्व आत्माओं की आप श्रेष्ठ आत्माओं के ऊपर महानता की ..... रहती है।(3)
17. निवास, गृह, आवास।(2)
18. आज शिव बाप अपने विश्व के चारों ओर के श्रेष्ठ भाग्यवान ब्राह्मण कुल को बहुत-बहुत अरब-खरब बार दिव्य अलौकिक ..... की मुबारक दे रहे हैं।(2)
19. आज के दिन अमृतेवेले से सभी के ..... में यही खुशी की लहरें दिखाई दे रही हैं- वाह बाप का और हमारा अलौकिक जन्म।(2)
20. बापदादा..... निवासी बच्चों को सदा ही इमर्ज कर यादप्यार देते हैं, क्योंकि इतनी आत्माओं को बाप से मिलने का सुख देते हैं। सेवा करना अर्थात् बाप समान सुखदाई बन सुख देना।(4)
21. जैसे गुरू की गद्दी होती है ना तो यह ..... का तख्त, ... धारण कराना और ..... सुनाना। सुनाना सिर्फ नहीं लेकिन ..... धारण कराना, यह टीचर्स को बापदादा ने गुरूभाई का तख्त दिया है।(3)

16/24- पहेली का उत्तर
(अव्यक्त मुरली 24-02-2002)

ऊपर से नीचे: 1. वायुमण्डल, 2. नम्बरवार, 3. सहज, 4. गति, 8. समय, 11. हलचल, 13. भाषण, 14. नारी, 16. अति, 18. प्रत्यक्ष, 19. भय।

बायें से दायें: 1. वायब्रेशन, 3. सहयोग, 5. मन्दिर, 6. जन्म, 7. सेवा, 9. लक्षण, 10. रहम, 13. भावना, 15. अचल, 17. रीति, 18. प्रकृति, 20. वाणी, 21. यज्ञ, 22. क्षमा।

भारत विश्व गुरू तभी बनेगा, जब हमारी भावनाएं सकारात्मक होंगी

कटनी सम्मेलन में सभी संतों ने एकमत से व्यक्त किए विचार

कटनी-म.प्र.। कटनी ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा संत समागम एवं गृहस्थ जीवन में रहते हुए पवित्र जीवन जीने वाले युगलों के लिए सम्मान समारोह आयोजित किया गया।

संत सम्मेलन में विशेष रूप से संत महामंडलेश्वर कमल किशोर,शिवशक्ति अखाड़ा,सहारनपुर ने कहा कि ब्रह्मा बाबा के बच्चे परमात्मा शिव की संतान हैं। ब्रह्माकुमारीज़ का कार्य परमात्मा का कार्य है। हम तो घरबार छोड़ कर तपस्या करने निकल जाते हैं लेकिन गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए, श्वेत कपड़ों में बैठे हुए ये वे सन्त हैं जो घर में रहते आप तपस्वी जीवन जीते हैं जोकि बहुत बड़ी बात है। ज्ञान की बातें यूं ही नहीं मिलती। उसके लिए यह एक ही राजयोग की विधि है और वह सिर्फ ब्रह्माकुमारीज़ आश्रम में ही सिखाया जाता है। भारत में आये परमात्मा शिव को चुनिन्दा लोगों ने ही अभी तक पहचाना है। प्रेम की ज्योति जब हम प्रज्वलित करते हैं तो वह कई गुना बढ़ जाती है। आनंद की अनुभूति करने के लिए परमात्मा की याद ज़रूरी है। हमें ब्रह्माकुमारी बहनों से जीवन जीना सीखना चाहिए।

सबको यहाँ आना ही है-परमानंद जी

परमानंद जी,सतना ने अपना अनुभव सुनाते हुए कहा कि एक बार हम ट्रेन में थे तो किसी ने पूछा कि आप कहाँ गये थे? हमने कहा कि ब्रह्माकुमारी आश्रम में गये थे। उन्होंने कहा कि आप सनातनी हो, वो तो ईसाई हैं। हमने कहा सफेद कपड़े पहनने से कोई ईसाई होता तो सफेद कपड़े पहने हुए ये सारे राजनेता भी ईसाई हो सकते हैं। अगर ब्रह्माकुमारीज़ कहती हैं कि भगवान आया हुआ है तो कोई तो आधार होगा। आप आकर समझो तो सही। साधु-संतों का काम ये ब्रह्माकुमारी बहनें कर रही हैं। नारी को समाज में अबला कहा गया, परमात्मा आकर अबला को सबला बनाते हैं। हमें युगलों की पवित्रता आश्रम तक खींचकर लायी है। परमात्मा की श्रीमत पर ब्रह्माकुमारी बहनें चल रही हैं। कटनी की महापौर श्रीमती प्रीति सूरी ने कहा कि कितनी सौभाग्य की बात है कि यहां इतने संत पधारे हुए हैं। इस अवसर पर हम यह संकल्प लें कि हम अच्छे विचार धारण करें व आत्मा-परमात्मा के मिलन द्वारा वैकुंठ तक पहुंच जाएं। हमारे निराकार गुरू शिव को कोई रोक नहीं सकता। पूर्व विधायक गिरधर पोद्दार ने कहा हमारे ग्रंथों में लिखा है कि यत्र पूज्यन्ते नारी तत्र रमन्ते देवता। ब्रह्माकुमारी आश्रम ने संत सम्मेलन का आयोजन किया यह बहुत हर्ष की बात है। इंदौर ज़ोन के धार्मिक प्रभाग के कोऑर्डिनेटर ब्र.कु. नारायण ने बताया कि ओमशान्ति के मंत्र में समाया है सर्व समस्याओं का समाधान।

स्वर्ग देखना हो तो माउंट आबू जाओ

पुष्पेन्द्र महाराज ने कहा कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज़ ईश्वरीय विश्व विद्यालय एक ऐसा विद्यालय है जहाँ परमात्मा पढ़ाते हैं। परमात्मा का पता जानने के लिए पहले खुद के पते के बारे में जानना होगा। जो कहते हैं परमात्मा नहीं है तो उन पर धिक्कार है। अगर परमात्मा नहीं है तो कैसे चल रहे हैं। अगर आपको स्वर्ग देखना हो तो माउंट आबू चले जाओ। वहाँ साक्षात परमात्मा का वास अनुभव होगा और उसके बारे में आपको यकीन हो जायेगा।

भारत पुनः बनेगा सोने की चिड़िया

ब्र.कु. पुष्पा दीदी,प्रयागराज राजिम ने कहा कि अब दुनिया से अति तमोप्रधानता का समय शीघ्र समाप्त होकर भारत फिर से सोने की चिड़िया बनेगा। कार्यक्रम में गीतांजलि परिषद के शिष्यों ने भक्ति गीतों पर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। ब्र.कु. लक्ष्मी दीदी,कटनी ने सभी संतों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन ब्र.कु. राखी,बिलासपुर ने किया। इस मौके पर 50 युगलों का सम्मान किया गया। संत सम्मेलन के पूर्व जीवन में पवित्र रहने वाली युगलों की शोभायात्रा निकाली गई जोकि संत सम्मेलन स्थल पर पहुंचे।

गृहस्थ आश्रम में रहते हुए पवित्र जीवन जीने वाले 50 युगलों का किया गया सम्मान

आध्यात्मिकता लाती जीवन के प्रति एक उच्च दृष्टिकोण : अकेला

व्यापार एवं उद्योग जगत से जुड़े 1000 से भी अधिक लोगों ने की शिरकत

गुरूग्राम-हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ के ओमशान्ति रिट्रीट सेंटर में संस्था के व्यापार एवं उद्योग प्रभाग द्वारा तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन में विशेष अतिथि कॉरपोरेट मामलों के मंत्रालय की संयुक्त सचिव अनीता शाह अकेला ने कहा कि आध्यात्मिकता का सम्बन्ध किसी धर्म से नहीं बल्कि जीवन के प्रति उच्च दृष्टिकोण से है। एक अच्छा व्यवसाय वही है जिसमें आर्थिक उन्नति के साथ नैतिक मूल्यों का समावेश हो। ओमशान्ति रिट्रीट सेंटर की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि धन कमाना कोई बड़ी बात नहीं है लेकिन धन कमाने के साथ-साथ दुआएं कमाना बहुत बड़ी बात है। धन कमाने के पीछे विशेष लक्ष्य का होना आवश्यक है। जीवन का सबसे बड़ा लक्ष्य है सबको सुख देना। इसके लिए जीवन में आध्यात्मिकता का होना सबसे महत्वपूर्ण है। जिस प्रकार शरीर के लिए भोजन ज़रूरी है, ठीक उसी प्रकार आत्मिक चेतना के लिए धर्म, श्रेष्ठ कर्म और आध्यात्मिकता का भोजन आवश्यक है। मॉर्गन स्टेनली इन्वेस्टमेंट बैंकिंग के अध्यक्ष विष्णु बंसल ने बताया कि वर्तमान परिदृश्य में आध्यात्मिक मूल्यों की सबसे अधिक ज़रूरत हैं। आईएफएम ग्रुप के अध्यक्ष एवं संस्थापक इकबाल सिंह ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ आध्यात्मिकता की प्रयोगशाला है। यहाँ पर हर व्यक्ति अपने प्रैक्टिकल जीवन से सबको एक दिव्य संदेश दे रहा है। राजयोगिनी ब्र.कु. उषा दीदी,फरीदाबाद ने अपने आशीर्वचन में कहा कि धन का सदुपयोग हम तभी कर सकते हैं, जब आध्यात्मिक मूल्यों का समावेश हो। ब्र.कु. अंजलि,बहादुरगढ़ ने बताया कि संस्था इस प्रभाग के माध्यम से व्यापार एवं उद्योग क्षेत्र से जुड़े लोगों को आध्यात्मिक रूप से सशक्त बनाना चाहती है। मुंबई से आये प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु. हरीश ने संस्था का परिचय दिया। कार्यक्रम के अंत में ब्र.कु. सुरेन्द्र ने सबका आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन ब्र.कु. ख्याति एवं ब्र.कु. दिव्या ने किया। कार्यक्रम में व्यापार एवं उद्योग जगत से जुड़े 1000 से भी अधिक लोगों ने शिरकत की।

स्वयं में समाज कल्याण की वृत्ति रखने से ले सकेंगे उचित निर्णयः शुक्ला

मुम्बई-गामदेवी(महा.)। माधवबाग, भुलेश्वर में चल रहे आध्यात्मिक मेले के अंतर्गत ज्यूरिस्ट और टैक्स प्रोफेशनल्स के लिए आयोजित सेमिनार में 'आध्यात्मिकता और नैतिकता के बीच का अनुसरण' विषय पर उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश जस्टिस शैलेन्द्र शुक्ला ने कहा कि एक न्यायाधीश को अपने जीवन में आध्यात्मिकता द्वारा पवित्रता, सच्चाई, सकारात्मकता और समाज के कल्याण की वृत्ति धारण करना आवश्यक है ताकि हमेशा उचित निर्णय लिया जा सके। पूर्व प्रमुख जिला न्यायाधीश आर.आर. गांधी ने कहा कि वे बाल्यकाल से आध्यात्मिकता, ध्यान, नैतिकता एवं मूल्यों के समीप रहे हैं और ब्रह्माकुमारीज़ यही श्रेष्ठ जीवन बनाने के लिए सिखाती हैं। उन्होंने संस्था की बहुत महिमा की और कहा कि विश्व में अभी इस ज्ञान की बहुत आवश्यकता है। सीजीएसटी के पूर्व प्रमुख आयुक्त प्रमोद कुमार अग्रवाल ने कहा कि भारत की संस्कृति हमेशा आध्यात्मिकता से जुड़ी रही है, आध्यात्मिकता के बिना विश्व में सच्ची सुख, शांति, समृद्धि स्थापन नहीं हो सकती। जैसे व्यक्ति के जीवन में आध्यात्मिक ज्ञान और योग से सम्बन्ध जुड़ जाता है तो हर व्यक्ति देश के कायदे, कानून को सहजता से अपनाने लगता है। कार्यक्रम के अंत में मेले में लगी प्रदर्शनियाँ भी दिखाई गईं। स्वर्णिम भारत की प्रदर्शनियों को देख सभी हर्षित हो गये।

विश्व शांति की शुरूआत होती आंतरिक शांति सेः दवखरे

ठाणे-महा.। ब्रह्माकुमारीज़ के कलवा(पश्चिम) द्वारा विश्व शान्ति आध्यात्मिक सम्मेलन में 'शान्ति स्पा' स्टॉल में उपस्थित सभी लोगों को गहन शान्ति और आध्यात्मिक ऊर्जा की अनुभूति हुई। दीप प्रज्वलन और ब्र.कु. प्रभा दीदी के स्वागत भाषण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। इसमें ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा विज्ञान, शिक्षा, अध्यात्म और समाजसेवा में दिए गए योगदान को रेखांकित किया गया। इस मौके पर विधान परिषद सदस्य निरंजन वसंत दवखरे ने कहा कि सच्ची विश्व शान्ति की शुरुआत आन्तरिक शान्ति से होती है। राजयोगिनी ब्र.कु. लाजवंती दीदी ने कहा कि शान्ति मनुष्य का स्वाभाविक गुण है। अध्यात्म हमें प्रेम और सद्भावना से जीना सिखाता है। राजयोगिनी ब्र.कु. डॉ. गोदावरी दीदी ने कहा कि धैर्य और सहनशीलता शान्ति का मूल आधार हैं। सिस्टर अपर्णा साल्वी,पूर्व नगरसेविका ने कहा कि परिवर्तन की शुरूआत घर से होनी चाहिए। ब्र.कु. बिंदीया ने गाइडेड मेडिटेशन द्वारा गहन शान्ति की अनुभूति कराई। स्मृति चिन्ह भेंट कर अतिथियों का सम्मान किया गया तथा स्मारिका वितरण भी किया। इस मौके पर महाराष्ट्र विधानसभा के विपक्ष उपनेता डॉ. जितेंद्र आव्हाड ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से सभा को संबोधित किया और शुभकामना दी। रामचंद्र भिलारे ने भी विचार रखे। अन्त में प्रो. ब्र.कु. अनुज द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

RNI NO RAJHIN/2000/00721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/24-26, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2024-26, Posting on 12th TO 14th and 22nd TO 24th each month, published on 3rd May, 2025
स्वामी - आर.ई.आर.एफ, प्रकाशक, सम्पादक एवं मुद्रक- गंगाधर नरसिंघानी द्वारा कैपिटल ऑफसेट, L 801-I, Sector-28, GIDC Gandhinagar(Guj.) से मुद्रित एवं ओमशान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़,शान्तिवन-राज. से प्रकाशित।
कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया ब्रह्माकुमारीज़, शांतिवन,- 307510
See Latest News
www.omshantimedia.org